दिव्य आदेश

(भाग पाँच)

रामचन्द्र

श्री रामचन्द्र मिशन

शाहजहाँपुर, उ०प्र० (भारत)

दिव्य आदेश

(भाग पाँच)

इरशादात हज़रत क़िब्ला पीर

दस्तगीर श्रीमान रामचन्द्र जी

साहब फ़तहगढ़ी, ज़िला फ़र्रुख़ाबाद

मन इब्तदाई 1 अप्रैल 1945 ई०

लग़ायत 19 नवंबर, 1945 ई०

प्रथम संस्करण - २००१, ११०० प्रतियाँ

©श्री रामचन्द्र मिशन

मूल्य रु० 90/-

प्रकाशक :
श्री रामचन्द्र मिशन,
प्रकाशन विभाग
शाहजहाँपुर, उ०प्र० (भारत)

मुद्रक :खन्ना आर्ट प्रिन्टर्स,
WZ-190, शादीखामपुर,
वेस्ट पटेल नगर,
नई दिल्ली - 110 008.

प्रस्तावना

हमारे लिए एक सौभाग्य की बात है कि हमें एक महान हस्ती के कुछ संदेशों को एक पुस्तक के रूप में आप सब के सामने प्रस्तुत करने का शुभ अवसर मिला, जिन्हें हमने ***दिव्य आदेश*** नामक पुस्तक के रूप में प्रस्तुत किया है। इसमें दिव्य संदेश, जो हमारे पूज्य बाबूजी को एक आदेश के रूप में मिले थे, अगर हम पढ़कर अपनी बुद्धी पर जरा भी जोर डालें, तो हमें पता चलेगा कि हमारे पूज्य बाबूजी महाराज कितनी महान हस्ती हैं और किन किन महान शक्तियों की प्रेरणा से उन्होंने सहज मार्ग की स्थापना की और मानव समाज के उद्धार के लिये जीवन पर्यान्त कार्यरत रहें। और अब भी कार्यरत हैं। बाबूजी हमेशा कहते थे कि एक Special Personality का जन्म हो चुका है और उसके माध्यम से आध्यात्मिक दुनियाँ की भावी अवरचना होगी। यहाँ तक कि उनके संदेशों में महाप्रलय तक का वर्णन है। यह संदेश कोई साधारण संदेश नहीं हैं यह आगे आने वाली पीढ़ियों के लिये अनौखे संदेश होंगे। हम सब का मनुष्य जीवन में आने का क्या उद्देश्य है इस पर अवश्य विचार करना चाहिये और इसी जीवन में जीवन के उद्देश्य को प्राप्त कर के मानव जीवन के लक्ष्य को प्राप्त करने का प्रयास करना चाहिये। इस संसार में आकर मनुष्य अनेक कष्टों को झेलते हुए अनेक जीवन बिता जाता है। और जीवन-मृत्यु के काल चक्र में फँस कर अपने संस्कारों को भोगता रहता है। इस काल-चक्र से किस प्रकार छुटकारा पाया जा सकता है। इस के लिये उन्होंने ***सहज मार्ग*** की स्थापना की है। इस मार्ग की सहायता से मनुष्य इस जन्म में जीवन मृत्यु के चक्र से छुटकारा पा सकता है। अर्थात मोक्ष प्राप्त कर सकता है। मोक्ष प्राप्त करने के लिये

मनुष्य को सहज मार्ग के नियमों पर चलकर मनुष्य जीवन सार्थक बनाने के लिये सहज मार्ग एक अचूक साधन है। आध्यात्मिक मार्ग पर चलने के लिये भक्ति (Devotion) विश्वास (faith) और आत्म समर्पण (Surrender) का महत्त्वपूर्ण स्थान है। विश्वास एक ऐसी शक्ति है जो हर मनुष्य की विचार धारा (thinking) को बदल सकती है और आध्यात्मिकता के उचित मार्ग पर चलने के लिये विवश कर सकती है।

प्रस्तुत पुस्तक दिव्य आदेश उन संदेशों (Messages) पर आधारित है जो हमारे पूज्य बाबूजी को Direct Super Conscious state में दिये गये और उन्होंने अपने हाथों से डायरी में लिखें, जो कि कई भाषाओं में लिखे हुये हैं। उनका रूपान्तरण एक अच्छे अभ्यासी श्री मदन मोहन गुप्ता जी के प्रयासों से किया गया । उनके कठिन प्रयासों की सहायता से यह पुस्तक इस शुभ अवसर पर प्रस्तुत करने में समर्थ हुए हैं। इसके साथ ही कम्प्यूटर तथा अन्य प्रकार की सहायता श्रीमति अमिता कुमारी, श्री सुनीत कुमार, श्री पुनीत कुमार और श्री गुरु प्रसाद के पारिश्रमिक सहयोग से संभव हुआ है। प्रस्तुत पुस्तक के रू-ब-रू original script के तर्जुमें को सामने रक्खा गया है। इसमें किसी प्रकार का विचार परिवर्तन और न ही उनके शब्दों में परिवर्तन (change) किया गया है।

प्रस्तुत पुस्तक में खास बात यह है कि दिल्ली की भूमि पर जो कष्ट आते हैं जिस खूबसूरती से उन कष्टों का निवारण होता है यह आश्चर्यजनक बात है। हमारे गुरु महाराज महात्मा रामचन्द्रजी महाराज को Lord Krishna ने एक अध्यात्मिक Reservoir create करने की अनुमति दी थी। उस कार्य को हमारे गुरु महाराज एक आध्यात्मिक बिन्दु बनाकर इस पर अपने आशिर्वाद की दृष्टि बनायी। इसलिए

समय-समय पर मुश्किल आने के बाद भी ईश्वर की मदद मिलती है। और सृष्टि ने यह Plan किया कि ऐसे मिशन की स्थापना की जाये जिस से सारी दुनियाँ को फायदा हो। और स्वामी विवेकानन्द जी ने इस स्थापना की आज्ञा हमारे गुरु महाराज को प्रदान की। इसके साथ ही साथ यह हुक्म दिया कि मिशन का Emblem, जो सहज मार्ग Emblem कहलायेगा, कैसा होना चाहिए बताया जिस का विवरण निम्न प्रकार है।

"The way should be clear of all things and light should grow dull and dull till it diminishes in the end. There should be no sun and no moon in the way. In one corner of the emblem there should be the Rising Sun glittering or shining on the base making horizon at one corner. The wave you made at the bottom of the emblem in sketch should be filled with Sri Ram Chandra Mission pointing Sahaj Marg. There should be an opening in the middle where you have written Shri R.C. Mission."

इस प्रकार 21-7-45 को मिशन की स्थापना की और ऐसा द्वीप प्रज्ज्वलित हुआ जिस से सारी दुनिया को, आगे आने वाले समय में फायदा हो जिस के लिए हम सब को हमारे गुरु महाराज का आभार प्रकाट करना चाहिए ।

प्राणाहुति पद्धति सिर्फ हमारे सहज मार्ग में ही है जिससे कि मनुष्य का transformation राजयोग पद्धति (सहज मार्ग) से किया जा सकता है। ऐसी अद्‌भुत क्रिया न आज तक आयी और न ही आयेगी।

आधुनिक युग में कोई भी प्राणी बिना आध्यात्मिक सहायता के दिन प्रति दिन के जीवन को उचित रूप से चलाने में असमर्थ है। अब जो युग आने वाला है वह आने वाली कठिनाईयों का प्रतीक है। इससे यह ज्ञात होता है कि आने वाले युग में हर मनुष्य को कठिनाईयों का सामना करना पडेगा। इन कठिनाईयों को सहन करने में आध्यात्मिकता का महत्वपूर्ण योगदान होगा।

अन्त में हम यही कहेंगे कि हर इन्सान को किसी न किसी रूप में ईश्वर से लगाव रखना चाहिये। सहज मार्ग ही एक ऐसा पथ है जो , सद्गुरु बाबूजी महाराज के आशिर्वाद से, आपको शान्ति पथ पर अग्रसर कर सकता है।

इस दिव्य आदेश का 5 वाँ भाग आपके सामने प्रस्तुत है और हर अभ्यासी को बल्कि हर व्यक्ति को इसे पढ़ने से प्रेरणा मिलेगी और हो सकता है हर पढ़नेवाले को कुछ न कुछ ईश्वरीय मदद मिले और उनकी प्रवृत्तियों में बदलाव आ सकता है। इसलिये मेरा यह प्रस्ताव है और हर अभ्यासी की ड्युटि बन जाती है अपने दोस्त को इस पुस्तक को पढ़ने के लिए अपनी तरफ से प्रोत्साहित करे जिससे हो सकता है उन में बदलाव आये और उनका झुकाव अपने आप आध्यात्मिकता की तरफ हो जाये, जो हर एक के लिये जरूरी बनता जा रहा है।

उमेश चन्द्र

दिव्य आदेश

भाग - 5

1-4-45

7.00 AM भण्डारा फतेहगढ़, मक़ाम समाधि

Swami Vivekanand (S.V.): Overhauling is required among the persons, but a few as you are, change of method is necessary. The people are generally going the old ways. They are sticking to the principles of Muslim styles which is no more required now. Quotations are given generally from the Mohammedan books. You should start tomorrow without fail.

3-4-45 शाहजहाँपुर

हज़रत क़िब्ला : इस कामयाबी का सेहरा रामेश्वर के सिर है। तुम्हारे जुम्ला ख़यालात का जवाब यह है, जो सतसंग के मुतल्लिक़ हैं। और तुम्हारी कुल शिकायात जो कुछ मुझ से हैं (उन का जवाब यह है कि) मैं ने ज़रूरत नहीं समझी कि उस हालत पर खड़ा करूँ जिस की, वक़्त के लिहाज़ से तुम ज़रूरत समझ रहे थे। बेहतर बात

मैं ही समझ सकता हूँ। जो लोग सतसंग में बैठे थे, उन की कैफ़ियत आज दिन नहीं गई। अगर चैलेंज की शक्ल पैदा हो जाती तो यक़ीन रखो, मैं अपना दिल खेल देता। क्या तुम समझ सकते हो कि इतने दिनों की मेहनत मैं चैलेंज की शक्ल में बरबाद होने देता। अब दूसरी स्कीम आ रही है, यह इत्तलाह है।

S.V. : One year's time is allotted to you for Southern India, on your request from your Guru. You are not at leisure at any time. Duties are coming - constructive programme of your satsang, be left on one only. You will get this programme from Lord Krishna. We are together on this point (i.e. constructive work) under my perfect guidance, no concern with your Guru. I am the head of this department (construction); spiritual work He will do. Permanent arrangement.

हज़रत क़िब्ला : वक़्त 7 (सात)बजे शाम - राजेन्द्र कुमार को destruction से छोड़ दिया गया।

S.V. : Accept my congratulations. I highly speak of Inspector Saheb for the splendid work he has done. I am quite satisfied with his work. I want three day's time for the reward promised for Inspector Saheb.

श्री कृष्ण भगवान : जनूबी हिन्द का दौरा दरपेश है। मोहलत दे दी गई।

कबीर साहब: मेरा काम यूँ ही रहा जाता है।

S.V. : His name will go with the history with his relation to my Lord.

5-4-45

हज़रत क़िब्लाः मदन मोहन लाल! मैं रामचन्द्र का कहना हुक्मे ख़ुदा समझता हूँ। जो काम इस ने मेरे सुपुर्द किया है, उस में हमातन मसरूफ़ हूँ। एक बात तुम लोगों के सुपुर्द करता हूँ कि इमारत को तुम लोग ले लो और तावक़्तेकि मैं दूसरा हुक्म इस के मुतल्लिक़ न दूँ, जारी रखो। मुझे क़रार उस वक़्त आयेगा, जब मैं इस काम को तकमील कर लूँगा।

6-4-45

S.V. : You have left your Lord in his place. Now you are worrying me all the time. There is a vast difference in शग़ले राब्ता, what you call, of the day and the past. You are now with full force. You are thinking of me all the time and I am thinking of you all the time to the same extent.

11-4-45

हज़रत क़िब्लाः अब मैं ने अज़ीज़ रामचन्द्र से काम लेने की

तरकीब यह सोची है कि मैं रामचन्द्र में यानी उन के जिस्म के अन्दर ख़ुद मौजूद रहूँ। और यह काम करें। ज़रूरतन् जाता-आता रहूँ या तालीम के लिये बाहर आ जाया करूँ। यह एक ऐसी बात है जो किसी की समझ में भी नहीं आ सकती। ईशर सर्व व्यापक है। ख़ुद से मेरा मतलब यह है कि जिस हैसियत से मैं आलमे-बाला में रहता हूँ, उसी हैसियत से इन में रहूँ और मैं ने ऐसा ज़र्फ़ भी इस को बना लिया है।

S.V. : Good gracious, quite a new thing. If I explain the meaning of it, it will cover the pages. Such an example was never set before.

नोटः दहरा एक्स्प्रेस से रवानगी हरद्वार।

12-4-45 कुम्भ, हरद्वार

हज़रत क़िब्लाः यहाँ के जितने मक़ामात हैं, शुद्ध कर दो। ज़मीन की कसाफ़त भी निकाल दो। ब्राह्मणों का डिस्ट्रक्शन। साधू सम्प्रदाओं में जा सकते हो। 14 अप्रैल को हरद्वार छोड़ दो। देहली चले जाओ। देहली में काम बहुत है। (10.30PM) कल तुम्हारी ड्युटि 8 बजे सुबह से घाट पर रहेगी। कम अज़ कम एक घंटा रहोगे। हरद्वार की कसाफ़त साफ़ हो चुकी। रात में ब्राह्मणों का डिस्ट्रक्शन और दिन में हरद्वार मुनव्वर करते रहो।

13-4-45 8.40 AM ख़ास कुम्भ का दिन

हज़रत क़िब्लाः तुम्हारे देहली पहुँचने की इत्तला दे दी गई।

9 AM **नोटः** (देहली के एक बुज़ुर्ग ने मुझ से पूछा कि आप (RC) देहली किस वक़्त और किस दिन पहुँचेंगे।)

हज़रत क़िब्लाः कल दोपहर को कूच कर दो। जब तक रहो, मुनव्वर करते रहो, मगर यह ख़याल रहे कि एक दम से कुल ताक़त मत खींच देना। जैसा एक-दो जगह कर चुके हो। हल्का ख़याल करते रहो। (12.00 PM) इस वक़्त हरद्वार काफ़ी अच्छी हालत में है।

नोटः देहली के अब्दाल ने मुकर्रर तारीख़ व वक़्त देहली पहुँचने का दरियाफ़्त किया और कहा कि मुझ को आप की हिफ़ाज़त करने का हुक्म मिला है।

15-4-45

हज़रत क़िब्लाः ज़ात से जैसा काम तुम ने लिया है, किसी ने नहीं लिया होगा।

(गढ़मुक्तेश्वर)

नोटः गढ़मुक्तेश्वर से देहली की निस्बत काम मिला। जैसे ही मैं देहली स्टेशन से बाहर निकला तो देहली के एक बुज़ुर्ग ने कहा

कि मैं अब्दाल हूँ और मैं ने अपनी ड्यूटि शुरु कर दी।

हज़रत क़िब्ला : देहली में बहुत काम है। और बहुत मेहनत की ज़रूरत है। कल देहली को शुद्ध कर दो और इस को फ़ैज से ऐसा भर दो कि ज़र्रे-ज़र्रे में नूरे-हक़ीक़त झलकने लगे। इस के बाद दूसरा काम मिलेगा। अब जा रहा हूँ। दो घंटा आराम करो। रात से काम शुरू होगा। (3.00 PM)

16-4-45 देहली

हज़रत क़िब्लाः देहली का काम अच्छा हो रहा है। नायब का तख़्ता उलट दो। आज यही काम रहेगा।

S.V. : You have done well in Delhi.

हज़रत क़िब्लाः कल से फिर देहली मुनव्वर करो। देहली में फ़ैज़ बराबर जारी है। इस वक़्त भी वही बात है। ज़ात की ताक़त देहली पर बराहे रास्त रुजूअ हो गई है। उम्मीद है कल तक काम ख़त्म हो जायेगा।

बदरियाफ़्त फ़रमायाः देहली में इतना नफ़ीस फ़ैज़ जारी है कि इस का समझना मुश्किल है। ज़र्रात और परमाणु ख़िला के रोशन हो चुके हैं जिस से परमाणु में असर प्रवेश होता रहेगा। लोगों पर असर ज़रूर कम है। वक़्त पर यह परमाणु जो तुम ने अपनी

हिकमत से बनाये हैं, उन पर असर करेंगे। देहली का ज़र्रा-ज़र्रा मुनव्वर हो चुका है, मतलब ज़मीन से है। (10.30 PM)

17-4-45 देहली

हज़रत क़िब्ला : इस वक़्त देहली का काम तुमने ख़त्म कर दिया। कल कूच कर दो। तुम ने देहली की ज़मीन की तह में एक रूहानी Reservoir क़ायम कर दिया; दूसरे मायनों में इस को फ़ैज़ का मस्कन् बना दिया। ज़मीन शुद्ध हो चुकी। ख़िला में नूर भरे जाओ। देहली के लोग बहुत देर में सम्भलेंगे। तुम अपना काम ख़त्म कर चुके। इसीलिये भेजा गया था कि देहली की ज़मीन को शुद्ध करो।

अब्दाल देहली: देहली की सरज़मीन फ़ैज़ उगलने लगी। अफ़सोस किसी के आँखें नहीं।

हज़रत क़िब्ला: रामचन्द्र तुम इत्मीनान रखो, ऐसी ईश्वर की मरज़ी है और तुम्हें कुछ करना भी है। ऐसे आसार पैदा हो जायेंगे कि तुम हर जगह को, जो तुम ने दरियाफ़्त की हैं, ख़ुद बनवा सको। **बिरला** के पास तुम जा सकते हो। अगर रुपये के ज़ौम में तुम को ज़रा भी नीची निगाह से देखा तो कुल उस की सन्स्था और पूंजी वापस ले लूँगा। इस को हुक्मे ख़ुदा समझो। इस से बेहतर है कि तुम वहाँ का इरादा मुल्तवी कर दो। तुम को मैं ने वो दौलत दी है कि जो बादशाहों को भी नसीब नहीं । तुम्हारी यादगार ज़माने में रहेगी

और कोई न कोई शख़्स ऐसा पैदा होगा कि तुम्हारे मिशन को मुकम्मिल (complete) कर दे। जो मक़ामात तुम ने **मथुरा** में दरियाफ़्त किये हैं, किसी की ताक़त नहीं कि दरियाफ़्त कर सके। यह बातें आम तौर पर out नहीं होना चाहियें जब तक कि इन के खुलने का वक़्त न आ जाये। और कोई शख़्स इन को खोलने के लिये आमादाः न हो जाये। मैं फिर कहता हूँ, **रामा शंकर!** तुम को अपने भाई (RC)की हालत मालूम नहीं है। और इस का अन्दाज़ा लगाने वाला कोई भी नहीं हुवा। दुनिया में कोई ताक़त, कोई संत ऐसा नहीं है जो इस के मुक़ाबले में ठहर सके। मैंने वो चीज़ बनाई है कि जिस की क़द्र आलमे-बाला में है और यह जो कुछ अहकाम जारी कर दे तो साकिनान या मोक्ष आत्मा, आलमे-बाला का, इन का करना फ़र्ज़ होगा। मैं भी इस से बरी नहीं। इस ने सीधापन में अपने आप को ऐसा छुपा लिया है कि लोगों को अन्दाज़ नहीं होता। मैं फिर कहता हूँ, कि मुबारक वो शख़्स है जो इन से फ़ायदा उठाये और इन की सोहबत इख़्तियार करे। यह मौक़ा मुद्दतों तक अब नहीं आ सकता, न ऐसी हस्ती ज़हूर पज़ीर हो सकती है। इनकी हैसियत अवतार की है और यह बात confidential है। बहुत से पाये के बुज़ुर्गों ने इन को अपना सज्जादा नशीन बनाया है। और जो रह गये हैं, वो अपनी उम्मीदें इन से लगायें बैठे हैं। बस मैं तुम से **(रामा शंकर)** यह ही कहता हूँ कि इन से तुम जो कुछ फ़ायदा उठाना हो, उठालो। इन से मुहब्बत मुझ से मुहब्बत होगी। मैं अपना ज़र्रा-ज़र्रा इन में लय कर चुका हूँ। और कुलियतन् फ़ना हूँ। ऐसी फ़नाईयत कहीं देखने में नहीं आयेगी और न आगे उम्मीद है। इन्हों ने कुछ

बाक़ी नहीं रखा जो मुझे दे न दिया हो। यह बात कहीं नहीं मिलेगी। इन को मिसाल समझो और उस के नक़ल करने की कोशिश करो। बस अब मैं जा रहा हूँ। (9 1/2 AM)

हज़रत क़िब्ला (7.20 PM): तुम ने देहली का काम ख़त्म कर दिया। अब रुजूअ रहने की ज़रूरत नहीं । 36 घंटे हो चुके हैं कि ज़ात से देहली पर फ़ैज़ गिर रहा है। रात को वो काम ले लो जो रामेशर प्रशाद के सुपुर्द है।

बदरियाफ़्त फ़रमाया: कि हल्का-हल्का अगर ख़याल करो तो मैं मना नहीं करता मगर ज़रूरत इस की भी नहीं रही। तुम ने इस वक़्त तीन push बहुत ज़बरदस्त, ज़ात की लाइन्तहा ताक़त के दिये।

18 and 19.4.45

Return journey to Shahjahanpur

21.4.45

S.V.: I am still at **Cownpore** (Kanpur) and not leaving the place till the work is finished. Your Guru is with me nearly all the time. We are not going to the **brighter world**. The work will be bubbling up after the task before

us is finished. There is a great bustle and excitement here at **Cownpore**. Some unknown agency is at work, keeping them aloof from metamorphosical position of **chacha**.

22.4.45

श्री कृष्ण जी महाराजः इस वक़्त राम चन्द्र ने वो काम किया कि मुझ से रहा न गया, और आना पड़ा। इस ने, जिस काम के लिये **बनारस** भेजा जा रहा था, उस को भी थोड़े दिनों के लिये रोक दिया ताकि गड़बड़ी इस दौराने-मोहलत में पैदा न हो। यह बात ख़ास ही के हिस्से में है। मैं ऐसा शख़्स कहाँ से पाऊँ जो ऐसी ड्युटि सुपुर्द की जाये। यह सब उन के पीर का करिश्मा है। तुम्हारी प्रार्थना मन्ज़ूर हो गई। तुम्हारे गुरु महाराज (हज़रत क़िब्ला **महात्मा रामचन्द्र जी** साहब, फ़तेहगढ़) और **स्वामी विवेकानन्द जी** को वो रुत्बे अता किये गये जो किसी को मयस्सर न होंगे। हाँ, उन्हें अख़्तियार ज़रूर है, कि वो जिसे चाहें ऐसा बना लें।

हज़रत क़िब्लाः मदन मोहन लाल! मैं अपनी क़िस्मत को सराहता हूँ और **स्वामी विवेकानन्द जी** के भी यह ही अल्फ़ाज़ हैं। इस बारीकी पर मरहबा! इस ने ऐसी बात पकड़ी और इतनी reasonable थी कि इस को क़ुदरत भी मानने से इन्कार नहीं कर सकती है। इस ने फ़र्ज़-इन्सानी अदा कर दिया। मगर मैं इन दरज़ात को रख कर क्या करूँगा। मुझे इन्हीं को transfer करना होंगे। इस मुहब्बत की मिसाल सिर्फ़ **अमीर ख़ुसरो*** हो सकते थे, मगर वो

बात और थी। अगर सच पूछो तो कह दूँ कि यह मुहब्बत **ख़ुसरो** में भी नहीं पाई जाती। तामीले-हुक्म इस को कहते हैं कि मैं ने एक मर्तबा **रामचन्द्र** से कहा था कि मुझ को और **स्वामी विवेकानन्द जी** को एक ही समझो। चुनाँचे इस ख़याल को मद्देनज़र रख के उस ने **श्री कृष्ण जी महाराज** के हुज़ूर में दोनों के लिये प्रार्थना की और दोनों बहरावर हुये। प्रार्थना यह थी कि मुझ को ज़रा-ज़रा सी बात पर इस क़दर इनामात बख़्शे गये- और आप फ़रमा रहे हैं कि यह सब तुम्हारे पीर का करिश्मा है, जिस ने तुम्हें ऐसा बनाया। फिर कोई वजह मानेअ नहीं मालूम होती कि इस का सिला हमारे पीर को क्यों न दिया जावे। और मेरी प्रार्थना यह ही है। और चूँकि **स्वामी विवेकानन्द जी** साहब ने कोई कसर उठा नहीं रखी, लिहाज़ा वो भी इस नेमत (इनाम) से बहरावर हों।

(Foot note: **अबुलहसन, यमेनुद्दीन, अमीर ख़ुसरो 651 हिजरी (1253-54AD) में पैदा हुये। संक्षेप में वो अपने नाम **ख़ुसरो** के साथ अपनी पुश्तैनी (पैत्रिक) उपाधि 'अमीर' लिखते थे और जन साधरण में अमीर ख़ुसरो के नाम से प्रसिद्ध हुये। उन्होंने बहुत से बादशाहों (ख़ानदान ग़ुलामाँ, ख़ल्जी और तुग़लक़) के ज़माने देखे। हज़रत **निज़ामुद्दीन औलिया** (र०) के मुरीद थे।*

*ख़ुसरो अभी नाबालिग़ ही थे और **ख़्वाजा हज़रत निज़ामुद्दीन औलिया** (र०) की मजलिस में शिरकत के लिये पहली बार अपने पिता के साथ आये तो खान्क़ाह (आश्रम) के दरवाज़े के बाहर ही खड़े रहे और अपने पिता के साथ अन्दर नहीं दाख़िल हुये। उन्होंने फ़िल्बदीह (फ़ौरन्, बे सोचे) एक क़ताअ (मुक्तक) लिखा और अन्दर **हज़रत** के*

पास भेज दिया।

'तो आँ शाही कि बर ऐवाने क़सरत,
कबूतर गर नशीनद, बाज़ गरदद।
फ़क़ीरी, मुस्तमन्दी बर दरामद,
बयायद अन्दरून, या बाज़ गरदद।।'

(अर्थातः आप एक ऐसे बादशाह हैं कि जिन के महल की छत पर जब कबूतर बैठता है तो बाज़ (falcon) बन जाता है। एक ग़रीब, हाजतमन्द (इच्छुक, अभिलाषी, निर्धन) और परेशान शख़्स आपकी दहलीज़ पर आया (खड़ा) है क्या उसे अन्दर आने की इजाज़त है, या वापस चला जाये।)

कहते हैं कि ***हज़रत*** *ने भी फ़ौरन ही इस का उत्तर एक काग़ज़ के पुरज़े पर मुक्तक की शक्ल में लिखा और भेज दिया।*

'बयायद अन्दरूँ मर्दे हक़ीक़त,
कि बामायक नफ़स हमराज़ गरदद।
अगर अबला बुवद, मर्दे नादाँ,
अज़ाँ राही कि आमद बाज़ गरदद।।'

(अर्थातः अगर हक़ीकत (Reality) का मुत्लाशी है तो अन्दर दाख़िल हो सकता है और मेरा हमराज़ बन सकता है। यदि वो नासमझ और बेवक़ूफ़ है तो ऐसे राही (शख़्स) को अन्दर आने की मुमानत है, उसे फ़ौरन वापस हो जाना चाहिये।)

उस दिन से ख़ुसरो हज़रत के मुरीद हो गये और सिलसिले में

दाख़िल हो गये।

*जब भी ख़ुसरो **देहली** से बाहर जाते, हज़रत **निज़ामुद्दीन औलिया** (र०) उन्हें ख़त लिखते थे जो प्यार व मुहब्बत से पुर होते थे। ख़ुसरो उन पत्रों को बहुत एहतियात से संभाल कर रखते थे। उनकी यह इच्छा थी और वसीयत (will) थी कि यह पत्र उन के मरने के बाद उन के साथ ही उन के कफ़्न में रख दिये जावें ताकि उन पत्रों के आधार पर, महशर (Dooms day) के रोज़, परमात्मा की कृपावृष्टि उन पर नाज़िल हो।*

***हज़रत निज़ामुद्दीन** औलिया की अपने शिष्य अमीर ख़ुसरो से मुहब्बत के क़िस्से आम कहानियाँ बन चुके हैं, यहाँ तक कि हज़रत ने एक दफ़ा फ़रमाया कि "जब मैं हर चीज़ से तंग आजाता हूँ, यहाँ तक कि मैं स्वयं अपने आप से भी, लेकिन इस 'तुर्क' से मुझे कभी थकावट नहीं होती।"*

*उन्होंने अमीर **ख़ुसरो** को 'तुर्क उल्लाह' का ख़िताब (उपाधि) भी अता फ़रमाया। 'तुर्क' शब्द का अर्थ है 'महबूब' (प्रेमी, प्रेमिका), लिहाज़ा 'तुर्कुल्लाह' के अर्थ हुये 'महबूबे इलाही' (यानी ईश्वर का प्यारा।)*

***हज़रत** कहा करते थे कि "तुम मेरी ज़िन्दगी के लिये दुआ करो, क्यों कि मेरे बाद तुम भी ज़िन्दा नहीं रह पाओगे।' एक दफ़ा शेख़ ने कहा, 'तुम भी मेरे बग़ल में दफ़न किये जाओगे और इन्शा अल्लाह ऐसा ही होगा क्योंकि मैं ने अल्लाह से वायदा लिया है कि जब वो (फ़रिश्ते) मुझे स्वर्ग की ओर ले जा रहे होंगे, तो मैं तुम्हें साथ लेता चलूँगा।"*

*जब ख़्वाजा **निज़ामुद्दीन औलिया** (र०) की मृत्यु हुई, **ख़ुसरो देहली** से बाहर कहीं दूर लड़ाई पर गये हुये थे। हज़रत ख़्वाज़ा ने अपने*

मुरीदों को यह ताकीद कर दी थी कि उन की मृत्यु की सूचना, **ख़ुसरो** को कम से कम चालीस दिन तक न दी जावे। किन्तु **ख़ुसरो** बहुत बेचैन रहते थे और जब देहली पहुँचे तो सीधे हज़रत की ख़ान्क़ाह में पहुँचे। वहाँ पहुँचने पर उन्हें ख़्वाजा की मृत्यु की ख़बर मिली। उसी समय उन्होंने यह दोहा पढ़ा:-

"गोरी सोवे सेज पर, मुख पर डारे केश,
चल ख़ुसरो घर आपने, रैन भई चौदेश।।"

उस के बाद नाराए हक़ मारा और जाँ ब हक़ हो गये (यानी मृत्यु हो गई)। किन्तु इतिहासकार कहते हैं कि उन की मृत्यु ख़्वाजा की मृत्यु के छह-सात माह बाद (725 हिजरी) 25 सितम्बर, 1325 ई० में हुई। बस्ती हज़रत निज़ामुद्दीन, देहली में, हज़रत निज़ामुद्दीन औलिया के पैताने, दक्षिण की ओर एक अहाता (चार दीवारी) है जिसे **"यारानी चबूतरा"** कहते हैं। इसी चबूतरे पर अमीर ख़ुसरो का मक़बरा है।

अमीर **ख़ुसरो** ने अपनी 75 साल की ज़िन्दगी में ग़ज़ल, क़सीदे, मसनवी, रुबाई और क़तेअ, न सिर्फ़ अरबी, फ़ारसी और तुर्की में, बल्कि हिन्दी में लिखे। उनकी 'मुकरनी', 'दो सुख़ने' 'चौबोले' तो ख़ूब प्रसिद्ध हैं। उर्दू वाले इन्हें अपना सब से पहला शायर (कवि) तसलीम करते हैं।

S.V.: There are so many persons in our Mission but nobody has this kind of wisdom. They are practically nil. I will go side by side with your Guru. Can anybody boast of such a thing? I think nobody but myself and your Guru. I promise, from this day, that for you I shall leave no stone

unturned in doing my duty, if so said. Think me just as you think of your Guru. We are now initiated to the greatest power and enjoy the same position. This was the reward given to us by the highest authority of **Lord Krishna**.

हज़रत क़िब्लाः वक़्त 11.40 AM: जो रुत्बा हम लोगों को **कृष्ण जी महाराज** से अता हुवा है, उस के अहकाम सादर होने लगे।

S.V.: This is all due to the company of your Guru.

अगस्त्त मुनिः 4.15 PM: आप ने वो काम किया है कि मिसाल रहेगी। गुरु ने आप में कोई कसर नहीं रखी, और यह उन्हीं का कमाल है कि ऐसी सूझ बूझ आप ने पाई।

अत्री ऋषिः अहकाम जारी हो गये।

हज़रत क़िब्लाः मैं बाबू **मदन मोहन लाल**, वकील वदायूनी को तुम्हारी (RC) training में देता हूँ। जब तक कि मैं हुक्म न दूँ, **मदन मोहन लाल** से कुछ ताल्लुक़ न रहेगा। तालीम के इस दौरान में वो क़तई रुजूअ न हों। मगर यह याद रहे कि उन के किसी मामले में जब तक कि मेरी guidance न हो, जल्दी न करना। तैयार हो जाने के बाद मैं उन के सुपुर्द कर दूँगा। फिर वो जाने और वो जानें।

25-4-45

हज़रत क़िब्लाः (11.15 AM) मैं मदन मोहन की आज से ड्युटि लगाता हूँ कि ताहयात अपने इस काम को फ़र्ज़ समझ कँर करें। वो यह है कि energy अज़ीज़ रामचन्द्र में ग़ायबाना तौर पर भरते रहें और जब ज़रूरत समझें, अपने में भी भर लिया करें। (11.20 AM) - आज मेरा इरादा था कि जो दरजा मुझ को नसीब हुवा, मैं इस को transfer कर दूँ। मैं ने इस से राय पूछी। इसने जवाब दिया कि यह आप ही के शाने-शायाँ है, वैसे जो मर्ज़ी हो। मैं दिल पकड़ कर रह गया। अब मैं नहीं मान सकता, इस ने अपनी ड्युटी अदा की है तो मैं भी अपनी ड्युटि अदा करूँगा। 11.40 AM- मैं ने मुन्तक़िल कर दिया। मैं क्या करूँ, अगर ख़ुद न करता तो भी ऐसा ही होता। यह राज़ है। रोकना वाजिब न था।

S.V.: My Lord has transferred his newly acquired position. I assure you that this kind of love will never exist after. Hands are coming but not to this qualification as it stands today. Sometime I begin to feel much about the persons not coming to you to avail of the present opportunity. Such time will never come, I prophecy. Blessed are those who make use of the time. I also prophecy that such a Guru like my Lord, Mahatma Ram Chandraji of Fatehgarh, will not come again in this world. I also say that such a person like you will not come again, who may entrap me in his love. People will feel after you, I promise

solemnly not to leave you any time before or after your death.

हज़रत क़िब्ला: इनकी (मदन मोहन) क़द्र यहाँ कुछ नहीं। आलमे बाला में जा कर देखे, या जिस की आँख खुली हुई हो, वो देखे। यह सब वक़्त की बात है।

हज़रत क़िब्ला: (9.10 PM--रात) आज दिन भर मसरूफ़ रहा। जब से यहाँ से गया हूँ। मैं ने स्वामी **विवेकानन्दजी** के कुल आश्रम जो हिन्दुस्तान में हैं, देखा; व दीगर ममालिक में भी गया। आश्रम के लोग तालीम-याफ़्ता हैं और अच्छे-अच्छे विद्वान हैं। Organization निहायत अच्छा पाया। सब लोग एक ही शख़्स के मोहताज मिले। यह बात तुम्हारे लिये सबक़ सीखने लायक़ है। मेरे यहाँ भी जो लोग हैं, एक ही शख़्स के मातहत रहेंगे और उस का हुक्म सब का मानना फ़र्ज़ होगा। हर शख़्स जो मेरी लाइन में Head होगा, उसकी हैसियत प्रेज़ीडेन्ट की रहेगी। और सब की dealings उस से रहेंगी। यह तय है कि उस पर बराहे-रास्त बातें उतरती रहेंगी और वो ही दूसरों के लिये अहकाम होंगे। Head शाहजहाँपुर रहेगा। यह सेन्टर (Centre) उस वक़्त तक नहीं हटेगा जब तक मैं हुक्म न दूँ। दीगर जगाहें मठ के नाम से पुकारी जायेंगी। तुम को मालूम है कि मैं ने शाहजहाँपुर centre क्यों रखा? इस की वजह यह है कि जहाँ ऐसी ज़बर्दस्त हस्ती ईशर की कृपा से पैदा हो जाये, जैसी कि आयन्दा पैदा होने की उम्मीद न हो, तो वो ही जगह starting point बनना चाहिये।

S.V.: My Lord has been today throughout my Guru's Mathums (मठम्) and studied the situation Himself. I agree with my Lord's proposal, keeping Shahjahanpur as centre for years to come, and who knows, I may follow my Lord in this respect.

26-4-45

S.V.: Now it has become essential for me to look after you in everyway. We have to take work from you. We have appointed a great sage who will look to your health permanently. I mean as long as he is in the world. He will carry with him this duty after he has gone from this world. A serious step will be taken if he is away from his duty even for a single moment.

ऋषि सीलोन यानी लंका: मुझ को अभी ड्युटि मिली है कि तुम्हारी तन्दुरुस्ती की हर तरह से परवाह रखी जाये। भोग अवश्य है इससे मजबूरी है। कमज़ोरी नहीं आने दूँगा। मेरे पास हुक्म इस तरीक़े से पहुँचा है कि अगर तुम ने यह ख़िदमत कर ली तो वायदा करता हूँ कि तुम को हमारे क़रीब ही जगह मिलेगी। काम शुरू कर दिया। वायदा करता हूँ कि इस ड्युटि को उम्र भर अन्जाम दूँगा। और मुझ को ख़ुशी भी है । मेरी ज़बान आवर नहीं कर सकती कि जो लुत्फ़ शुरू करते ही मुझ को मिलना शुरू होगया। यह बात और यह कैफ़ियत कहीं देखने में नहीं आई। कूट-कूट कर तुम्हारे गुरु ने

भर दिया। कोई जगह ख़ाली नहीं रखी। एक-एक परमाणु में भरपूर ताक़त मौजूद है। एक बात बड़े मारके की बताता हूँ और बड़ी दक़ीक़ है कि यह ड्युटि मेरे क्यों सुपुर्द की गई। वजह यह है कि आप ने अपने आप को बिल्कुल छोड़ दिया है। इसलिये बुज़ुर्गों को लाज़िम आया कि यह काम अपनी सुपुर्दगी में ले लें। आप की हालत एक बच्चे की है कि जो सिवाये माँ के दूसरे को नहीं पहचानता। मेरी यह दुआ है। यह दुआ बहैसियत बूढ़े होने और उम्र में बड़े होने के देता हूँ। जब तक ज़िन्दा रहो, परवानावार। लोग आप के शैदाई बनें और जिस काम के लिये आये हो, वो पूरा हो जाये। इस में हमारी सब की बेहतरी है। इसलिये यह दुआ वाक़ई तौर पर मैं अपने लिये कर रहा हूँ। कुछ एहसान नहीं है। आप में वो क़ुव्वत भरी जा रही है कि जिस्म छोड़ते ही इस काम को, जो क़ुदरत का मक़सद है, ज़ोर शोर से कर सकें। और इस ताक़त का ज़हूर हो चुका है। और मैं यह भी यक़ीन दिलाता हूँ कि ऐसी ताक़तें इन्सानी जिस्म में नहीं रह सकतीं। यह गुरु की क़ाबलियत है कि उस ने आप को ऐसा बना दिया।

27-4-45

S.V.: My Lord has taken up my work now. His work commences very soon. He has been to President (of Shri Ram Krishna Mission), Calcutta. If he comes to the right path, all will follow him.

गौतम बुद्धजी : मैं ने तख़्त पर लात मार कर फ़क़ीरी की। तुम मुलाज़्मत नहीं छोड़ सकते? मैं तुम को एक मर्तबा Dictation दे चुका हूँ।

हज़रत क़िब्ला: (9 बजे रात) अज़ीज़ रामचन्द्र ने इख़लाक़ की इन्तहा कर दी। देखो कितनी बारीक बात है और है बिल्कुल ज़रा सी। जिस वक़्त तुम लोगों की सफ़ाई करना शुरु की तो गन्दगी जो कुछ भी हो या न हो, बजाये पीछे जाने के, अपनी side में खैंची। यह लिहाज़ था कि मैं पीछे बैठा हुवा हूँ।

S.V.: Look here, Ram Chandra, I wanted this time, the help of Almighty (ज़ात), you did the same. The next difficult task you have taken this time yourself, when I stood in need of it. Just as I have already said.

हज़रत क़िब्ला: मदन मोहन लाल! इस ने इस वक़्त ज़ातको हरकत दे दी। मदन मोहन! हिन्दू ऋषियों को छोड़ कर आज तक कोई ऐसा न हुवा जो ज़ात से काम ले सकता। कहना तो मुझे यह चाहिये था कि हिन्दू ऋषियों ने भी इस दिमाग़ से काम नहीं लिया।

29-4-45

हज़रत क़िब्ला (6.45PM) कितनी ख़ुशी की बात है, ख़ुदा अज़ीज़ रामचन्द्र की समझ मुबारक करे। इस की समझ में

ऐसे नुकात आ रहे हैं कि ज़माने के लिहाज़ से उनकी बहुत ज़रूरत है। अब तक यह था कि क़ल्ब पर तवज्जो बुज़ुर्ग फ़रमाते थे और फिर सुग़रा, और कुबरा, और उस के आगे के मक़ामात ले लिया करते थे, और आख़िर में दिल के नीचे वाले मक़ामात, ख़सूसन् ज़ेरे-नाफ़ लिया करते थे। ज़माने के लिहाज़ से यह ज़रूरी है कि अब इन मक़ामात को भी लेते चलें। इस ने अक्सर जगह पर यह मक़ामाते-इस्फ़ल सफ़ाई के लिये अज़ ख़ुद ले लिये हैं। अब आज से मैं हिदायत करता हूँ कि दिल के मक़ाम को साफ़ करने के बाद यह इस्फ़ल चक्र लिये जायें और इन को ख़ूब साफ़ कर दिया जाये। मगर जागृत हालत न पैदा की जावे। और उनके साफ़ करने के बाद सुग़रा या पिण्ड साफ़ किया जावे। उस के बाद फिर दिल से, जैसा कि तरीक़ा है, तालीम जारी रखें। ज़माने के लिहाज़ से वाक़ई तौर पर यह ज़रूरी हो गया कि पहले यह ही मक़ामात (यानी इस्फ़ल) लिये जायें ताकि चंचलता में फ़र्क़ पड़े। मैं सिर्फ़ अज़ीज़ रामचन्द्र को यह हिदायत करता हूँ कि इन मक़ामात पर कहीं ज़ोर न दे देवें। वजह यह है कि इस के ऐसा करने से सिद्धियाँ, शक्तियाँ फ़ोरन् जाग उठेंगी और ऐसी हालत में ईशर से मुनहरिफ़ होने का अन्देशा होगा। यह एहतियात क़रीब-क़रीब सब को बरतना चाहिये। मदन मोहन लाल! इससे ऐसी बातें ज़हूर पज़ीर होंगी कि इस के बाद दुनिया अश-अश करेगी। ज़िन्दगी में भला इस की कोई क्या क़द्र करेगा। बज़ाहर मुठ्ठी भर हड्डियाँ हैं; मगर इस में मैं ने सब कुछ भर दिया है। आज से यह ही तरीक़ा रायज होगा।

S.V.: Next order to the sage of Ceylon issued. If he is failing off his duty like that of today regarding you, then it is I who will take away his powers.

3-5-45

हज़रत क़िब्ला: पीर की तवज्जो की पैरवी करना, ऐसी हालत में जब कि वो आज़ाद हो गया हो, बहुत मुश्किल है। **मदन मोहन,** यह दिमाग़ अब कभी पैदा नहीं होगा। अज़ीज़ **रामचन्द्र** ने इस वक़्त वो बात एहसास कर ली और तरीक़ा जान लिया जिस से कि मोक्ष आत्माएँ या आज़ाद रूहें तवज्जो दिया करती हैं। यह तरीक़ा बहुत कठिन है कि जिस्म रखते हुये उसी तरीक़े से, जैसे कि कोई आज़ाद हो, तवज्जो दे सके। ज़ाहिर है कि मैं इन में फ़ना हो चुका हूँ। इन की हर तवज्जो मेरी ही तवज्जो होती है। मगर यह तरीक़ा जो इस के अभी समझ में आया है, इस तरीक़े से तवज्जो देना यह मानी रखता है कि गोया यह ख़ुद आज़ाद हो कर तवज्जो दे रहा है या मैं ख़ुद अपनी मौजूदा हालत में तवज्जो दे रहा हूँ।

4-5-45

हज़रत क़िब्ला: देहली मुनव्वर हो चुका, अब कुल **शुमाली हिन्द** ले लो। **राजपूताना** बाद में लेना।

5-5-45

हज़रत क़िब्लाः मदन मोहन! यह बिल्कुल नये तरीक़े की तवज्जो है, जो इस के ख़याल में आई। तरीक़ा यह है कि अपने गुमशुदा हवासों को दूसरे के हवासों पर रुजूअ कर दे। मगर पेश्तर इस के कि यह अमल किया जावे, हवास साफ़ कर देना चाहिये। इस तरीक़े को रायज कर दो और इस का मूजिद **रामचन्द्र** को समझना चाहिये।

जग्गूः भाई साहब! कितने अफ़सोस का मक़ाम है कि आप से रूहानी दुनिया मुख़ातिब हो रही है मगर लोग आम तौर पर फ़ायदा नहीं उठा रहे हैं।

9-5-45 (10.00 PM)

S.Vivekanandji: A wonderful discovery. Your Guru will explain it. I want that these things should be introduced in my Mission.

हज़रत क़िब्लाः मदन मोहन! बड़े अफ़सोस का मक़ाम है कि जिस हद तक इस की ईजादें हैं, कोई सीखने वाला नहीं आ रहा है। इस की क़द्र सिवाये मेरे कौन कर सकता है? और न किसी में इतनी समझ है। बजुज़ मेरे इन की बारीकी और फ़ायदे का सहीह अन्दाज़ा नहीं लगा सकता। जिस वक़्त वकील बदायूनी के एहसास की

तारीफ़ यह ख़ुद कर रहा था, इस को ख़याल पैदा हुवा कि यह बात सब में पैदा क्यों न हो जाये। चुनाँचे क़ुदरत ने उस की मदद की और तरीक़ा उस के ख़याल में आही गया। वो यह है कि जिस शख़्स का एहसास बढ़ाना हो तो पहले यह ख़याल बांधे कि एक जगमगाता हुवा एहसास का सितारा उस के दिल में दाख़िल कर दिया। और अपनी will से उस की एहसासी चमक बढ़ा दे। इस तरह पर कि उस सितारे की कैफ़ियत रोशन मालूम हो। उस रोशनी को उस के (मामूल के) दिल में फैला दे। और उस सितारे का connection दिमाग़ से क़ायम कर दे। वक़्तन् फ़वक़्तन् चन्द यौम तक इस का ख़याल रखे ताकि वो मुस्तक़िल सूरत इख़्तियार करे। इस को अगर ज़्यादा तेज़ करना हो तो बजाये सितारे के सूरज का तसव्वुर बाँधे, मगर इस की मैं इजाज़त नहीं देता। बजुज़ किसी ख़ास हालत (मौक़े) के जिस का अन्दाज़ा कोई नहीं लगा सकता, सिवाये उस शख़्स के जिस का सम्बन्ध इतना गहरा मुझ से या बुज़ुर्गों से हो गया हो कि इस मामले में रोशनी और इजाज़त हासिल कर सके। यह बात सिर्फ़ अवतारों में पाई जाती हैं। इस लिये इस को आम तौर पर करने की सख़्त मुमानियत है। चाँद का तसव्वुर कभी नहीं बाँधना चाहिये, इस से गरमी कम होती है। और घुटलपन आ जाता है। सूरज के तसव्वुर में भी बड़ी एहतियात की ज़रूरत है और सही अन्दाज़े की ज़रूरत है। मैं तश्ख़ीस के साथ मना करता हूँ कि इन में से कोई अमल न किया जावे जब तक कि मुझ से इजाज़त न लेली जावे। इस अमल के लिये यह ख़ास शर्त है (मतलब सितारे वाले अमल से है) कि इस अमल के करने वाले के हवासों ने ख़्वाबीदा हालत इख़्तियार कर ली

हो, और सब से ज़्यादा मौज़ूँ वो शख़्स रहेगा जिस की यह हालत मुस्तक़िल हो गई हो। और ख़याल करने पर भी हवास ग़ायब पाये जायें और किसी तरीक़े से एहसास में न आवें। बाक़ी ख़ास-ख़ास लोग जितनी देर के लिये अपने हवास ख़्वाबीदा सूरत में कर सकते हों, उतनी ही देर दूसरे पर अमल किया जा सकता है। फिर भी मैं मुमानियत करता हूँ।

10-5-45

हज़रत क़िब्लाः **मदन मोहन लाल!** अज़ीज़ **रामचन्द्र** ने इस वक़्त कमाल कर दिया। तवज्जो का सिस्टम (system) क़तई बदल दो और अपने मुरीदैन को जो यह काम करते हैं, उन को ताकीद कर दो कि अब तवज्जो इस तरीक़े से दी जाया करेगी। एक उसूल इस के ख़याल में एक अरसे से घूम रहा था। वो यह है कि पैदाइशे - आलम के वक़्त ज़ात (Self) में छोब पैदा हुवा और उस छोब ने मुख़्तलिफ़ शकलें इख़्तियार कर लीं। इस के पसे-पुश्त ताक़त ज़ात की थी और है, और इस का हिस्सा ज़्यादातर **मन** की शक्ल में नमूदार हुवा। उस के पीछे ज़ात भागने लगी, जिस से मुख़्तलिफ़ सूरतें ज़हूर में आईं। यह बिल्कुल नया मसला है जो इस के दिमाग़ से उतरा या पैदा हुवा। इस के सही होने से कोई इन्कार नहीं कर सकता। पस इस कैफ़ियत को ले कर जो हर ज़ी-रूह में पाई जाती है और जो इन्सान में फ़ौक़ियत और जिला के साथ है। और वो छोब (या हरकत) जो धार की शक्ल में इन्सान में उतरा है

और जिस को मैं ने **मन** कहा है, वो भी इन्सान में मौजूद है और उस के पसे-पुश्त भी वो ही कैफ़ियत है जो छोब यानी अस्ल हरकत के पसे-पुश्त है। इस कैफ़ियत (यानी छोब या हरकत) के इन्सान में ज़्यादा तेज़ हो जाने की वजह से, पसे-पुश्त ताक़त का पता नहीं रहा और वो ताक़त माँद सी नज़र आने लगी। लिहाज़ा पहले जब तवज्जो दी जावे तो उस हालत को साफ़ करे यानी छोब को, जो बशक्ल **मन** नमूदार है ताकि उस के वो ज़र्रात जो ग़ैर मुनासिब हैं, अपना असर ज़ायल या कम कर दें। इस के बाद वो ज़र्रात की ताक़त जो उस छोब या हरकत को ताक़त पहुँचा रही है, उस को अपने आत्मिक बल से ख़याल करे। ऊपरी चीज़ यानी मन की तरफ़ उभार दे। हर चक्र पर यही अम्ल करता रहे.। नतीजा यह होगा कि वो ताक़त यानी ज़ात की हरकत या छोब जो पसे-पुश्त है, अपना अक्स अज़ख़ुद डालती रहेगी और जो कुछ कि तरक़्क़ी होगी, मुकम्मिल और मुस्तक़िल होगी। इस की बारीकियाँ उस वक़्त समझ में आयेंगी जब कि इस तरीक़े से तवज्जो देना शुरु की जायेगी।

11-5-45

हज़रत क़िब्ला: अज़ीज़ रामचन्द्र ने किसी वक़्त अपने भाई बाबू **मदन मोहन लाल** से ज़िक्र किया था कि अगर सूक्ष्म चीज़ में बहुत से round (चक्कर) दिये जायें तो उस में ठोसता (solidity) आ जाती है। ऐसे rounds ज़ात के Push (या धक्का देने) से जो धार निकलती है (यानी जो हरकत धार की शक्ल में निकलती है)

लाखों बरस रही है और एक दूसरे में परमाणु revolve करते रहे या चक्कर खाते रहे और आपस में मिल कर एक कसीर और ज़ख़ीर ताक़त बन गये। और जो ताक़त कि उन के दरमियान में थी, वो ही उन ताक़तों के देवता (मौक्किल या मवक्किल) कहलाये। मेरा मतलब इस से यह है कि ज़र्रात चक्कर खाते-खाते और अपने हमजिन्स ज़र्रात घसीटते-घसीटते ख़ुद बड़ी चीज़ या ताक़त बन गये। और यही हाल बराबर मुद्दतों तक रहा है। और उन की शक्ल (या हैसियत) मुख़्तलिफ़ Globes (कुर्राज़ात) या गोल चीज़ की शक्ल में आ गई है। घूमना फिर भी बन्द नहीं हुवा जब तक कि उन्होंने वैसी शक्ल नहीं क़ायम कर ली जैसी कि ज़रूरत थी और जैसा माद्दा मौजूद था। घूमना और टूट फूट अब भी जारी है और प्रलय के वक़्त (हद) तक क़रीब-क़रीब रहेगी। इन्सान बजाते ख़ुद एक विराट देश है जिस में यह चीज़ें हल्के (जुज़वी) तौर पर मौजूद हैं। इस लिये बुज़ुर्गों ने (सन्तों ने) उस को माजून मुरक्कब कहा है। (मस्लन् **पिण्डे** सो **ब्रह्माण्डे**)। उस में (इन्सान में) उन ज़र्रात की जो revolve (घूम रहे) कर रहे हैं, ठोसता भी मौजूद है। और पसे-पुश्त उस की ज़ात की कैफ़ियत पूर्ण रूप में कही जा सकती है। अब प्रलय (क़यामत) में क्या होता है कि उन की ठोसता (solidity) मादूम होने लगती है। मतलब यह है कि automatically जो चक्कर (गरदिश) से ज़ोर या ताक़त पैदा हुई है या हो रही है, उस का ख़त्म हो जाना प्रल्य का आग़ाज़ और अन्जाम समझना चाहिये।

(दूसरा स्टेज) अब तरीक़ा जो कल लिखाया गया था, इस क़ुदरत के उसूल को मद्देनज़र रखते हुये और वाज़ेअ कर दिया

गया। वो यह है कि सिर से पैर तक जो ज़ात मौजूद है उस को उन ज़र्रात की तरफ़ खींच दे जो चक्कर खा-खा कर ठोसता इख़्तियार कर चुके हैं मगर इन ज़र्रात का आकार क़ायम रखे। उन को क़तई मादूम न करे। **तन्बीह** : इस क़िस्म की तवज्जो जल्द-जल्द नहीं देना चाहिये और न हर शख़्स (हर कस व नाकस) इस का मुस्तहिक़ है। मैं इस तरीक़े (तवज्जो) का नाम **सारतत्व** रखता हूँ।

S.V.: Such method was never invented before, nor anybody besides you, has the capacity of doing so. You can bring the world change by this method. A man can be instantly changed if he has the capacity of being tuned to this much.

हज़रत क़िब्ला: यह मज़मून **रामचन्द्र** ने ऊपर लिखाया है, वो तरीक़े का basis है जो एक अरसे से इस के दिमाग़ में घूम रहा था। अल्फ़ाज़ इस बात को अदा करने के लिये अज़ीज़ रामचन्द्र को नहीं मिल रहे थे और अब भी ठीक तौर पर express नहीं हुवा। सेहत की ज़रूरत है, किसी वक़्त मैं कर दूँगा।

S.V.: I have said in Southern India that you have beaten the world record regarding probably the work of Ceylon. What you did this time .... cannot be expressed.

12-5-45

हज़रत क़िब्लाः जिस साइंस (Science) को तुम ने शुरु किया है, उस को तकमील दे दो, तब आगे बढ़ो। जो हालत कि ज़ात के छोब के पसे-पुश्त मौजूद है उस में अपने आप को फ़ना कर के तवज्जो दे तो बड़ा ज़बरदस्त असर होगा। मगर यह तरीक़ा हर कोई नहीं कर सकता।

इस ने अभी इस तरीक़े को और improve कर दिया, यानी यह कि पहले उस छोब (या हरकत) के ज़र्रात जो इन्सान में मौजूद हैं, उन की स्याही (तारीकी) को सलब कर ले, उस के बाद वो चमक (रोशनी या प्रकाश) जिस को भी एक क़िस्म का माद्दा कहा जा सकता है, खींच ले, मगर आकार क़ायम रखे।

तीसरी बात जो इस से भी बेहतर है और जिस का ज़िक्र करना लाज़मी है। अभी इस के ख़याल में आगई। वो यह हैं कि ज़र्रात में एक अरसे तक जो चमक रही है और उस का असर उन्होंने (ज़र्रात, परमाणु) अपने में ले लिया (जज़्ब कर लिया) है उस को भी दूर कर दे। अब ख़लूस है।

जिस मक़ाम पर ऋषि, मुनि नहीं पहुँचते, बरसों इबादत करना होती है और फिर भी वो मक़ाम दूर रह जाता है। वो इन तरीक़ों से (मामूल का) पहला क़दम वहीं (यानी अवस्था) पर जो दुर्लभ है, पहुँचता है। जिन चीज़ों को **वेदों** ने या दूसरी किताबों ने गाया है,

और उस को पार करना वाजिब कहा है; यह बात इस तरीक़े में पहली ही तवज्जो में साफ़ होती है।

वो मक़ाम क्या है? इस को मुसलमान सूफ़ियाए किराम ने **आलमे** क़ुद्स कहा है। और अपने यहाँ इस को **अव्यक्त गति** या माया रहित हालत कहते हैं। **माया** का बन्द सब से पहले टूटना शुरु हो जाता है। अगर यह तरीक़े इस्तेमाल किये जायें।

यह तरीक़ा आज तक किसी के ख़याल में नहीं आया। इस से जुम्ला मुश्किलें आसान हो गईं और तालीम कुनन्दा की बहुत सी मेहनत बच गई। अगर यह तरीक़ा मुत्वातिर किया जाये तो वो बात जो मुझ को नसीब थी, आसानी से पैदा हो सकती है।

तीसरे स्टेज की तवज्जो बहुत बाद को देना चाहिये। पहली के लिये आम इजाज़त है और दूसरी की ख़ास-ख़ास को।

हुक्मः मन इस ज़माने में बहुत चंचल हो रहा है और उस को आबो हवा भी उसी के मुताबिक़ मिल रही है। इसलिये चित्त की वृत्तियाँ शांत नहीं हो पातीं। लिहाज़ा मैं हुक्म देता हूँ कि मेरी औलाद में जो इस क़ाबिल हैं, पहले उन्हीं को रोकें। आम तौर पर जिस को यह समझ नहीं है कि इन तरीक़ों के ज़रिये किन-किन मक़ामात पर ज़ोर डाला जाये या अमल किया जाये, उन के लिये मैं इतना कहूँगा कि वो सिर्फ़ दिल के लतीफ़े को ले लें। लेकिन सफ़ाई हर मक़ाम की बदस्तूर साबिक़ करते रहें।

हज़रत क़िब्लाः इस तरीक़े में इस ने एक और ईजाद की। इस ईजाद का ताल्लुक़ तालीम से नहीं है। यह इस की ड्युटि में की एक बात है। अपनी ड्युटि को जिला देने के लिये इसने यह तरीक़ा किया है। कहीं-कहीं पर इस की बिगड़ी हुई शक्ल से भी काम लिया है।

ज़ात की ताक़त चौ तरफ़ा समाई हुई है और परमाणु यानी ज़र्रात में, जिन को इशारतन् छोब कहा गया है, मौजूद है। यह तरीक़ा इस बात का है कि दुनियाँ की मौजूदा शक्ल बदल कर उस हालत पर कैसे लाई जा सकती है जो शुरु में थी या उस से कुछ पहले थी। ज़ात की ताक़त को उभारे यानी उस के असर को इस तरफ़ खींचे (जिस को सिर्फ़ समझने के लिये बेरूनी ग़िलाफ़ कह सकते हैं और इस को छोब की हालत बार-बार मैं ने कहा है) मगर आकार क़ायम रहने दे।

बेहतरीन तरीक़ा जो ऊपर के तरीक़े में (भी) फ़ौक़ियत रखता है और अभी ईजाद किया है। वो यह है कि अपने आप को उस बड़ी शक्ति (ज़ात की ताक़त) में लय कर दे और जो बात या जो change करना मन्ज़ूर हो, उस के ख़याल को ले ले। इस तरीक़े में कि वो कुल ताक़त में फैल जाये और फिर उस को ज़ोर के साथ ज़र्रात के असर ज़ायल करने में (करने के लिये) push देता रहे; हत्ताकि उस का असर यह पूरा ले लें। यह तरीक़ा सिर्फ़ उस शख़्स को करना चाहिये जो इस ड्युटि पर मामूर हो। इस के बाद इसने एक तरीक़ा यह भी सोचा है कि प्रलय (क़यामत) की हालत कैसे

पैदा हो सकती है। यह तरीक़ा सिर्फ़ उस के सीने में ही रहेगा। नोट मैं लिखाना नहीं चाहता।

14-5-45

S.V. : Devote somewhere for 5 days alone. Nobody should remain with you during that time. You will be alone at your place and will see nobody. Take food but once in a day.

15-5-45

हज़रत क़िब्लाः बहुत तजुर्बे के बाद मैं इस बात पर आया हूँ कि अगर एक ही शख़्स को बनाले, मगर भरपूर, तो गोया उस ने अपने पीर का क़र्ज़ा अदा कर दिया। मेरा यह ही हाल हुवा है। यह और बात है कि उस की कृपा से **रामेशर प्रशाद, करुणा शंकर, मदन मोहन लाल**, अच्छी हस्तियाँ बन गईं। वाक़ई तौर पर मैं अपनी तमाम ज़िन्दगी में, एक ही को बना सका। मगर अफ़सोस किसी ने क़द्र न की। ज़माने की कुछ ऐसी हवा हो रही है कि चड़क भड़क अवाम को अच्छी मालूम होती है बल्कि ख़ास-ख़ास लोग भी इस को पसंद करते हैं। सूखी साखी चीज़ किसी को पसंद नहीं आती। अब मतलब पर आता हूँ। अज़ीज़ **रामचन्द्र** मेरी ज़िन्दगी का मआल बन गये। यहाँ तक कि बुज़ुर्गों की निगाहें अज़ख़ुद पड़ने लगीं। इस में कोई बात मैं ने न छोड़ी जिस का नतीजा यह हो रहा

है कि मुश्किल से मुश्किल गुत्थी, जिस में हर शख़्स की अक्ल हैरान है, इन से सुलझ (खुल) रही है। इस के दिल में कई रोज़ से ख़याल घूम रहा था कि कोई ऐसा तरीक़ा हो जाता (निकल आता) कि **मन** की दौड़ धूप जो एत्दाल से ज़्यादा हो गई है, कम हो जाती। चुनाँचे इस वक़्त उस के ज़हन में (तरीक़ा) आ गया। देखा तो ठीक बैठा।

तरीक़ाः **मन** की हालत तेज़ ज़्यादातर **दिल** ही में रहती है। **मन** को एक हिस्सा **ज़ात** का इस तरीक़े से समझ ले कि गोया यह दोनों (**मन** और **ज़ात**) चीजें, एक ही रंग की हैं। रंग से मेरा मतलब लाल-पीला, काले से नहीं है, बल्कि यह है कि अगर वो (**ज़ात**) नूर है जैसा कि कहा गया है तो यह (**मन**) भी उसी तरह का हिस्सा है और इस का रुख़ खींच कर उसी सूरत में ज़ात की तरफ़ इस तरह से कर दे कि गोया वो उसी का (**ज़ात**) का ध्यान कर रहा है। बल्कि उस का रुख़ बजाये बाहर के उस तरफ़ यानी **ज़ात** की तरफ़ खींच दे। और इस तवज्जो (ख़याल) को क़ायम रखे जितनी देर भी किसी को बिठाले। इससे सब शिकायतें मन की रफ़ाअ होती हैं।

दूसरा तरीक़ाः जितने चक्र और मक़ामात हैं, एक-एक कर के लेवे और उस में जो कैफ़ियत है, उस को ज़ात की कैफ़ियत से, शुद्ध करने के बाद, हम आहंग करे। इस तरीक़े से कि ज़ात उस शक्ल (यानी क़ैफ़ियते ज़ात) या हालत में उभरी हुई मालूम हो। और फिर जैसा कि मैं पिछले तरीक़े में बतला चुका हूँ, उस कैफ़ियते हम

- आहंगी को ज़ात की तरफ़ खींच दे यानी उस में लय कर दे।

कितनी अच्छी साइंस (Science) है कि जब एक छोटी चीज़ बड़ी चीज़ से चारों तरफ़ से दबाई जाती है या उस में ग़ोता दी जाती है तो बड़ी चीज़ उस को घेरा कर लेती है। अरसे तक अगर ऐसी चीज़ को दबाया जाये जो बिगड़ी हुई शक्ल में उसी का हिस्सा हो तो दोनों चीज़ें मिल जुल के एक हो जावेंगी। इस तरीक़े से जब सब चक्र पार कराले (यानी सब चक्रों में हम आहंगी ज़ात से हो जावे) तो इस कुल चीज़ (यानी कैफ़ियत) को ज़ात में डुबोदे या लय कर दे। और मुरीद पर कुछ दिनों तक अमल करता रहे। तब इस का नतीजा या अन्जाम वो कैफ़ियत होगी जो अच्छे अच्छों को होना मुश्किल है। और जो बरसों ख़ुद रियाज़ करने से हासिल नहीं हो सकता। **मन** की चन्चलता तो पहले ही तरीक़े से ख़त्म हो चुकेगी। यह तरीक़ा बहुत मुश्किल है और हर शख़्स के करने का भी नहीं। ईशर जिस को तौफ़ीक़ दे, वो कर सकता है। एक राज़ की बात लिखाता हूँ। **फ़ना फ़िल्लाह** होने का यह ही तरीक़ा है।

S.V.: Just when you invented this method, your Lord came to me, speaking all about your recent method. He was so glad that I cannot express in words. These things are rarely found in human beings.

17-5-45

हज़रत क़िब्ला : अज़ीज़ राम चन्द्र का इस हालत में भी रोज़ बरोज़ क़दम आगे को जा रहा है। यह दरिया इस क़दर बेपायाँ है कि इस को अथाह कहना चाहिये। बाबू **मदन मोहन लाल**, मुझे ऐसा दिल कही नहीं मिला जिस ने मुझे इस क़दर गर्वीदा कर लिया हो। लोगों को हैरत होगी, और मुझ पर मुमकिन है, हरफ़गीरी करें। जिस दरियाए बेपैदा किनार में, मैं पूरी ताक़त से तेज़ी के साथ बढ़ रहा था, वो इन को मुन्तक़िल कर चुका। अब मैं जहाँ के तहाँ हूँ और मल्का भी दे दिया कि जिस के साथ चाहें, एसा कर दें।

S.V. : I do not find such an example of love. The world will remember. You have not to come again.

हज़रत क़िब्लाः मुझमें यह जज़्बा था कि हर शख़्स को अपना सा बना दूँ और जो कुछ आता है, दिल खोल कर सामने रख दूँ। मगर अफ़सोस कोई शख़्स सीखने वाला नहीं मिला और अब भी यही हाल है। किसी शख़्स ने अपने क़वाये बातिनी को इस हद तक नहीं पहुँचाया कि मेरा असर ज़ोर शोर से गिरने लगे। हक़ीक़त तो यह है कि मैं हर शख़्स को अपने से ज़्यादा चाहता था। मैं ने हाल में इतनी ज़बर्दस्त हस्तियाँ, **मदन मोहन लाल, रामेशर प्रशाद, करुणा शंकर** की बनादीं, मगर सच पूछो तो इन में से कोई शख़्स ऐसा न निकला जिस को ख़ुदाई नैमत से बारवर करता। किसी ने इस की क़द्र नहीं की और इस वजह से अभी फ़नाईयत के बहुत से दरजे

तय करने को बाक़ी रह गये। इस से मेरी मुराद यह है कि मुझ तक पहुँचने के लिये अभी तक बहुत सी सीढ़ियाँ बाक़ी हैं। यह बात जो मैं ने अभी कही है, इतनी आसान है कि इस से ज़्यादा आसान कोई बात हो ही नहीं सकती। सींक की ओट पहाड़ है। (सिर्फ़) जज़्बा चाहिये।

तरीक़ा जितना हो सके, अपने अन्दर घुसता चला जाये। अपने नुक़्स देखता चले और एक एक करके उन को कम करता चले। जहाँ मुश्किल पड़े, मदद ले।

19-5-45

श्री कृष्ण जी महाराजः हट (हठ) योग का जो ख़्याल तुम्हारे दिल में पैदा हो रहा है, यह मेरा ख़याल है। यह दोनों **(हटयोग, राज योग)** चीजें एक ही हैं। एक हल्की और एक भारी। मैं ने ज़िन्दगी भर दोनों में मल्का होते हुये **राज योग** ही को बेहतर समझा है। दोनों को मिला दो। तुम्हारे गुरु इस वक़्त काम में मसरूफ़ हैं। **स्वामी विवेकानन्द** जी अब तक आलमे बाला में नहीं पहुँचे। पाँच साल बाद तुम्हारे पास काम बहुत बढ़ेगा। ईशरी (ईश्वरी) काम आ रहे हैं। दिल व दिमाग़ कमज़ोर होने की वजह से उस वक़्त इतना काम नहीं कर सकोगे, जितना कि कर रहे हो। मुमकिन है, कुछ दिनों एकान्त में रहना पड़े। इतना काम ज़्यादा का मतलब मेरा, मुलाज़मत से है। और तुम को इतनी फ़ुरसत भी नहीं मिलेगी कि सिवाये इस के कोई दूसरा काम भी देख सको। **राधाजी** तुम को दुआ कहती हैं।

हज़रत क़िब्ला: इस वक़्त **राधा जी कृष्ण जी** महाराज के साथ तशरीफ़ लाईं थीं और उन्होंने तुम को तवज्जो दी।

20-5-45

S.V.: I am here again after a very long time. I have come to commemorate your fund's ceremony. You have deposited something in the name of my Lord; I want to follow the same and have as much for me. My name will come after him (Master) in the deposit list. I shall be here again. I do not want anybody's hand as to the withdrawal of the amount. You will get dictates as to the withdrawal direct from your Master.

Put up the resolution before so many as you are to register the body as "Sri Ram Chandra Mission". The report of the Minute should be prepared in the special meeting. When this thing is passed, name it as above. Rules about it to be taken from some legal man among you. My Lord has appointed Secretary, Asstt. Secretary; while the post of Cashier will remain the same. The amount should be deposited somewhere in the name of "Sri Ram Chandra Mission" with its authority to withdraw the funds, to the Asstt. Secretary. The body will be called in future as "**Sri Ram Chandra Mission**". The letters and the Money orders too, reaching the Secretary or Asstt Secy will be addressed

as the same. You will prepare a note of the report of the Committee and members will be enlisted under the same body. As in future it will be called so. You will get guidance direct from me at times when you so require. In each case, you will remain President. My Lord has said somewhere about this for future guidance as well.

नोटः काम छोड़ कर **स्वामी जी** साहब जब रौनक़ अफ़रोज़ हुये, जब कि उन का काम मैं ने करना शुरु कर दिया। (RC)

22-5-45

हज़रत क़िब्लाः इस ने एक तरीक़ा तालीम के मुताल्लिक़ ईजाद किया था जो पीछे ज़रूर नोट होगा। मुज्मलन् तौर पर यह है कि **आलमे सुग़रा** या **पिण्ड देश** से जब **आलमे कुबरा** या **ब्रह्माण्ड** देश में ले जाना हो तो बजाये इस के कि **सुरत** सुग़रा से कुबरा में खींचा जाये, कुबरा ही में सुरत पैदा कर दी जाये। और दोनों साथ-साथ मुकम्मिल होती चलें, वग़ैराः वग़ैराः। अब इस वक़्त जो तरीक़ा बाबू **ईशर सहाय** के साथ किया था वो अजब ढ़ंग का था यानी यह, कि ख़याल का सिरा एक **पिण्ड देश** में रखा और दूसरा सिरा **ब्रह्माण्ड देश** की तरफ़ रुजूअ कर दिया। और जो सिरा कि पिण्ड देश की तरफ़ रखा था उस में भी धारें नीचे लतायफ़ में रुजूअ कर दीं। मतालिब यह था कि पिण्ड देश भी मुकम्मिल होता चले और ब्रह्माण्ड भी खुल जाये। और दोनों को साथ-साथ ताक़त पहुँचे। यह ही तरीक़ा इस से आगे के मक़ामात में भी बढ़ाया जा सकता है।

यह एक अछूता तरीक़ा है जो इस के ख़याल में आया।

मुबारक हैं वो शख़्स जो इस से फ़ायदा उठा लें। मैं फिर कहता हूँ कि यह वक़्त अब आना मुश्किल है। न क़ुदरत इस हद तक अब मोज़्ज़न होगी। यह (RC) जुम्ला गुत्थियाँ इस सिलसिले की खोल के जायेंगे। सिलसिले की तजदीद हो रही है और लोगों को ख़बर नहीं।

24-5-45

हज़रत क़िब्लाः बाबू ईशर सहाय लखीमपुरी की सैरगाह विलायते-कुबरा है। मैं इन को इख़्तियार देता हूँ कि अगर कोई नये लोग सीखना चाहें तो इन को तरीक़ा बतला सकते हैं। वो तरीक़ा जो वो ख़ुद करते हैं। अगर तवज्जो देने की नौबत आवे तो यह ख़याल करलें कि बजाये उन के (ईशर सहाय) मैं ख़ुद बैठा हूँ और ख़याल कर रहा हूँ। यह बात इस वक़्त इन्तज़ामन् की गई है। जब नये आदमी को बिठा लें तो यह ख़याल करें कि उन के वजाये मैं बैठा हुवा हूँ और उन की तरफ़ ख़याल कर रहा हूँ। और क़ल्ब साफ़ हो रहा है। नये आदमी को दो तीन रोज़ बिठाना चाहिये। उस के बाद सब के साथ ले सकते हैं और वो ही ख़याल सब पर किया जा सकता है। अगर कुछ गन्दगी अपने में महसूस होने लगे तो तन्हाई में यह ख़याल करें कि मुझ पर फ़ैज़ आ रहा है और धुवाँ की शक्ल में उस की कसाफ़त पीछे निकल कर साफ़ हो रही है।

26-5-45

S.V.: Rishi Markande wants to come. Call your Guru first. Your Guru is fixing Sunday for the purpose. We have kept reserved the liberated souls for you, when the time of the completion of the works of different authors, comes. There is no hurry of calling him so soon.

27-5-45

हज़रत क़िब्लाः दुरूदे शरीफ़ बन्द! सवाब पहुँचाने में **गायत्री** और दीगर मन्त्रों से काम लिया करो।

Foot Note: दुरूद : प्रशंसा, रहमत, सलाम, प्रार्थना, याचना

दुरूद शरीफ़: *वो दुआ और सलाम जो हुज़ूर नबी करीम मुहम्मद मुस्तफ़ा (सल्ल०) पर पढ़ा जाये। जिस के शब्द हैं:-*

"अल्ला हुम्मा सल्ले अला सैय्यदना मोहम्मदिन। मादनिल जूदे वलकरम व अलहे व आलिही व सल्लम।" अर्थात : हे परम पिता परमात्मा! हमारे आश्रय हज़रत मुहम्मद (स०) पर जो बड़े कृपालू, दयालू, व बड़े दाता हैं, अपनी कृपा वृष्टि कर और उन की सन्तान पर भी अपनी दया व कृपा वृष्टि कर। और वो सदा प्रसन्न रहें।

29-5-45

हज़रत क़िब्लाः तरीक़ा बहुत अच्छा है जो इस वक़्त मदन मोहन लाल, आज़माया गया। इस में फ़ायदे ही फ़ायदे हैं। बीमारियों का इलाज भी इस से हो सकता है। यह रूहानी और जिस्मानी, दोनों बीमारियों के लिये, दूर करने में काम आ सकता है।

तरीकाः दिमाग़ में ताक़त मौजूद है जिस का ताल्लुक़ अस्ल भंडार से है। चुनाँचे उस ताक़त के एक हिस्से को बुक़्क़ए नूर समझ कर नीचे उतारे और उस को हाथ, पैर, चक्र और मक़ामात में दौड़ाये। और फिर उस को (जिस्म से) बाहर निकाल दे। और दूसरा हिस्सा फिर ले ले।

मिसालः एक हिस्सा दिमाग़ से उतार कर यह ख़याल बांधते हुये कि यह आहिस्ता-आहिस्ता जा रहा है और जहाँ-जहाँ पर जा रहा है, उन सब जगहों को साफ़ करता हुआ जा रहा है। आख़िर में जिस्म से बाहर निकाल दे। अगर कोई बीमारी किसी उज़्व में मौजूद है तो उस नूर को उस में से हो कर गुज़ारे और यह तसव्वुर बांधे कि उस बीमारी को लिये हुये वो नूर (जिस्म से) बाहर निकल गया। यह सब को बतला दो।

दिमाग़ की रोशनी (नूर) करने वाला पहले सब से ऊँचे दरजे पर मामूल के touch कर दे और फिर उस को उसी तरीक़े से रेंगा-रेंगा कर निकालता रहे। दूसरा तरीक़ा यह भी हो सकता है कि

अगर उस शख़्स में जिस पर यह तरीक़ा किया जा रहा है, अगर ताक़त नहीं है तो (आमिल) अपने दिमाग़ की रोशनी को ज़रा ऊँचे दरजे से उस के touch करे। और फिर उस को जिस पर अमल करना मन्ज़ूर है (यानी मामूल पर) उसी तरह से घुमाता रहे और जिस्म से बाहर निकालता रहे। मगर यह याद रहे कि (आमिल) अपनी सबसे ऊँची हालत से इस को touch करके दूसरे में डालना न चाहिये। सख़्त ताकीद जानो। क़ायदा कुल्लिया यह है कि दिमाग़ से ज़रा ऊँचे मक़ाम पर बराये नाम touch कर दे। इससे आगे ज़रूरत नहीं।

तुम्हारी ज़िन्दगी इन्हीं कामों में व्यतीत होगी। बहुत सी गुत्थियाँ अभी सुलझना बाक़ी हैं। क़ुदरत तुम्हारे सामने बरहना हो रही है। यह हालत अच्छे अच्छों को नसीब नहीं हुई। अगर यह जिस्मानी शक्ल इख़्तियार कर ले तो उस के ताल्लुक़ात वैसे ही हो जायेंगे जैसे कि मुझ से जिस्म के होते हुये थे। मैं इस को ज़्यादा वाज़ेअ करना नहीं चाहता हूँ।

30-5-45

हज़रत क़िब्लाः बाबू **हर नरायन** जब तुम **जयपुर** जाओ तो **मुत्थन्नी** से कह देना कि वो ख़त जो आपने अज़ीज़ **रामचन्द्र** को लिखा था, और उस के जवाब में जो कि आप को लिखा गया है, उस का इन्तज़ार अब भी है। आप की रुहानी हालत कुछ नहीं है। **रामचन्द्र** उस को क़तअन् सलब कर चुके हैं।अगर यह ऐसा न

करते तो ख़ुद ब ख़ुद ऐसा हो जाता। इस लिये कि connection टूट चुके हैं। बाबू **हर नरायन** से मेरी तरफ़ से कह दो कि वो अपने भाई (RC) को जिस तरह से हो सके जाँच लें। Connection उन का (हर नरायन) भी ऊपर से नहीं है। मैं ज़रूर अभी बांधे बैठा हूँ।

हज़रत क़िब्ला: वक़्त शब = अगर किसी शख़्स को नींद न आती हो, तबियत में इज़्तराबी हो। मरज़ (मर्ज़) दिक़ कर रहा हो। ख़्वाबात डरावने दिखलाई दें। बच्चा हुड़के। मुश्किल का सामना हो। तंग दस्ती और ग़ुरबत हो तो अज़ीज़ राम चन्द्र के नाम से तावीज़ दिया जा सकता है और यह ही बेरोज़गारी के लिये इन के नाम से तावीज़ दिया जा सकता है। अगर किसी शख़्स की मैदाने जंग में हिफ़ाज़त मन्ज़ूर हो या हमल में बच्चे की परवरिश मन्ज़ूर हो। सूतर की (ज़च्चा ख़ाना) बीमारियों में जिस से बच्चा ज़ाया हो जाता हो, **श्री कृष्ण जी** महाराज के नाम से तावीज़ दिया जा सकता है। और यह ही तावीज़ औरत के गले में तावज़ाअ हमल पहनाया जा सकता है। और बच्चा होने के बाद यह ही तावीज़ उस के गले में डाल दिया जावे। हिन्दी अल्फ़ाज़ को तर्जीह दी जायेगी। इन सब तावीज़ों की यह एहतियात रखना है कि पैरों के नीचे न पड़ने पावें। बल्कि बेहतर तो यह है कि काम के बाद दरिया में सिरा देना चाहिये। बबाई मर्ज़ों में मुझ को याद कर लिया करें; मगर यह याद रहे कि मेरा और **स्वामी विवेकानन्द** जी का नाम साथ-साथ रहेगा। हर तावीज़ शुरु करने से पहले **ओम** लिखा जायेगा।

हिदायत : यह तावीज़ वो ही दे सकेगा जिस को मैं इजाज़त दूं या मुझ में हो कर कोई इजाज़त दे।

यह सब तावीज़ आम कर दिये जायें ताकि फ़ायदा पहुंचता रहे। आम से मेरा मतलब यह है कि नेक और ख़ुदा परस्त को बतलाये जावें। यह भी इस में एक शर्त लाज़मी है।

श्री कृष्ण जी महाराज: मेरे (नाम के) साथ **राधा जी** का नाम भी रहेगा।

हज़रत क़िब्ला : यहाँ तक माद्दा था (इस से पेशतर देखो तरीक़ा बर सुफ़ा 41 dt 29-5-45) अब इस के आगे दौरे रुहानियत है और यह तरीक़ा और ज़्यादा तरक़्की दिया गया है। यह उन लोगों के लिये है जिन के मक़ामात क़रीब-क़रीब दिमाग़ के नीचे सब खुल चुके हैं।

31-5-45

हज़रत क़िब्ला: मरहबा इस समझ पर कि कहने की देर नहीं हुई और ईजाद हो गई। मैं अपनी ख़ुशी का नैमते ख़ुदावन्दी का कहां तक इज़हार करूँ। अफ़सोस उन लोगों पर जो इन की तरफ़ मायल नहीं होते।

तरीक़ा : एक मक़ाम है जहाँ **माया** और **पुरुष** का सम्मेलन है। **माया** अपने आख़िर दरजे पर है और **पुरुष** की ताक़त की

इब्तदा है। दोनों के मिलने से एक ज़ोरदार ताक़त पैदा हो जाती है। इस को ज़ोर होने की वजह से **भंवर** की हालत भी कह सकते हैं। चुनाँचे इन्तहाई कमज़ोरी के वक़्त अपने ख़याल को उस से touch कर दे। और जिस्म में आने के लिये उस का रास्ता बना दे। ख़याल करते वक़्त **भंवर** की हालत stationary समझना चाहिये ताकि भन्नाटा अन्दर दाख़िल न हो जाये। मगर यह अमल हर शख़्स के करने का नहीं है। वही कर सकता है जिस की पहुँच यहाँ तक हो और **प्रकृति** को पार कर गया हो। मगर कुछ न कुछ फ़ायदा हर शख़्स को हो सकता है। **आलमे** कुद्स को पहुँचा हुवा आदमी इस को बख़ूबी कर सकेगा।

एक या दो मिनट तक कर ले। मैं इस वक़्त अज़ीज़ रामचन्द्र की जौलानी तबाअ से बहुत ख़ुश हुआ। मैं ने कुछ नहीं रखा जो इन को दे न दिया हो। अगर कुछ होता तो दिरेग़ न करता।

S.V.: You have become the object of my love. I don't find this thing in anybody else. A great task is still ahead. You have a great responsibility over your shoulders. Allowance is paid to your health.

हज़रत क़िब्ला: दूसरी ईजाद। मुज़्महली का मर्ज़ हमारे यहाँ बढ़ रहा है और उस का solution कुछ नहीं हुआ। **रामचन्द्र** के दिल में अभी यह ख़याल पैदा हुवा कि यह बात भी हल हो जाना चाहिये। चुनाँचे ईशर ने उस की मदद की और मुफ़ीद तरीक़ा ईजाद हो गया।

ईजाद रफ़ा मुज़्महली: तरीक़ा : अभी मैं ने जिस हालत को **भंवर** की हालत कहा है। यानी जहां पर **पुरुष** और **माया** मिलते हैं। उस से ज़रा नीचे हट कर ख़याल जमाये कि वहाँ की हालत जिस्म में सरायत कर रही है और मुज़्महली (gloominess) काफ़ूर हो रही है। इस में मेहनत की ज़रूरत है। इस से पहले वाली ईजाद में सिर्फ़ एक या दो मिनट की ज़रूरत है। यह तरीक़ा हर शख़्स कर सकता है। जिस की यहाँ तक पहुँच नहीं , वो यह ख़याल करे कि मेरा ख़याल उसी जगह से touch हो कर उस की धारें और ताक़त जिस्म के अन्दर ले रहा है। बस यह ही तरीक़ा है। कोशिश इस बात की करना चाहिये कि मुज़्महली न आने पावे। अगर आजाये तो यह तरीक़ा किया जा सकता है। और जिन शख़्सों को यह मर्ज़ हो गया है कि मुज़्महली हटने नहीं पाती, वो इस को मुत्वातर कर सकते हैं। इस के लिये हर शख़्स को इजाज़त है।

कुछ रफ़्तारे ज़माना, कुछ रोज़ी की कश्मकश ऐसी हो रही है कि जिस के असर से बचना मुश्किल सा हो गया है, मगर मर्द वो है जो इस का शिकार न होने पावे। मेरी ज़िन्दगी की हालत जिस किसी ने देखी हो, अन्दाज़ा लगाले कि मैं किस - क़दर ख़ुश रहता था। चहरे से हर वक़्त मगनता टपकती थी। तकलीफ़ात मुझ को किसी से कम नहीं रहीं। बात यह थी कि मैं ने अपनी यह आदत बनाली थी कि हर हाल में ख़ुश रहता था और हर तकलीफ़ को ख़ुदा की तरफ़ से समझता था और मौज के ताबे रहता था। यार की दी हुई चीज़ नागवार नहीं होना चाहिये। यह बात शर्ते मुहब्बत के भी ख़िलाफ़ है। क्या **मीरा बाई** का क़िस्सा जैसा कि मैं कहीं पर कह चुका हूँ,

क़ाबिले मिसाल नहीं है कि उस ने सिर्फ़ दूसरे के कहने पर कि यह **श्री कृष्ण जी महाराज** का प्रसाद है, या भेजा हुवा है, ज़हर हलाहल पी लिया था।

बसवाल **मदन मोहन लाल**, फ़रमाया : दोस्ती से कोई शख़्स बाहर नहीं ख़्वाह अज़ीज़ हो या रिश्तेदार। रिश्तए मुहब्बत को दोस्ती कहत हैं। अगर ग़ौर से देखा जाये तो दुश्मनी भी एक क़िस्म का रिश्ता है। और यह भी बेड़ा पार कर सकता है, बशर्तेकि इस को निभा ले जाये।

S.V. : I give you my words from today that whatever you order me will be thought by me (as) from the side of God. I shall remain faithful to you as friend till the world exists. I am so glad with you that I have no words to express my feelings. My Lord and myself both are in the same category. We think you as our Master. Obedience is my duty. The same tale will be repeated by all the sages of the world. You don't know your position. The reason is that you have thoroughly absorbed yourself in us. There is no limit to your spiritual improvement. It is going by leaps and bounds, on and on. You are being checked by us to the sudden improvement, i.e. we are providing checks and controls to your sudden development.

2-6-45

S.V. : The reason as to why we have not succeeded so far in our work is that you have become dull. You have interwoven yourself into the ज़ात (Self) thoroughly. This stage comes after one's death generally. A little hitch if given by us will end your life. A man of such a stage is not to live long in the world. We have to keep a vigilant eye to check you in the matter (प्रकृति) I keep you in touch with matter (माया) causing thereby sometimes tumult and disorder, leading to certain things not expected from a man of such a stage. I mean to say that you do certain things like an ordinary soul still to be jumped in ocean.

5-6-45

हज़रत क़िब्ला : मैं रामचन्द्र को हिदायत करता हूँ कि आयन्दा से वो ज़लज़ले का ख़याल न बांधें।

7-6-45

हज़रत क़िब्ला: एक बात ऐसी है जो किसी के समझ में न आयेगी। अज़ीज़ **रामचन्द्र** के सतसंग में बैठते ही ज़ात से एक गरदिश की शक्ल में फ़ैज़ शुरु हो जाता है। यह बात कल से पैदा हुई है। आज भी वो ही हालत है। फ़ैज़ जारी है।

9.35 PM क्या कोई इस हालत का दावा कर सकता है? हरगिज़ नहीं। **कानपुर** में सत्यानास शुरु हो गया।

S.V. : This is an end of spiritual progress. You are moving in the **whirl** of **Almighty**.

हज़रत क़िब्लाः इस फ़ैज़ के लिये देवताओं की आमद शुरु हो गई।

8.6.45

S.V. : In the former days, the people were aware of this method. The idea is forgotten now, since the dark period commenced in the religious history of the Hindus. The thing is coming to you to reveal the secret to the general public. The inventor of this method was **Lord Krishna** followed by so many Rishis after Him. The people were strong enough to receive it, then. This was the very method by which the spiritual benefit was given at a first step. The success depends upon one's own condition, I mean the doer of this method.

हज़रत क़िब्ला : तरीक़ा यह है कि दूसरे के सूक्ष्म शरीर का ख़याल करे। जिस्म के ज़र्रात क़ायम रहने दे। ख़याल करने से मेरा मतलब यह है कि उस को तवज्जो दे और जितनी इख़्लाक़ी बातें वो

उस से चाहता है उस में इल्क़ा कर दे। मगर यह बात पहली ही तवज्जो में नहीं कर देना चाहिये। जब अन्दर से रोशनी मिले कि अब इस को करना चाहिये, तब करे।

S.V.: By this method, the power goes directly to **subtle body.** The great soul as you are will never born again. The effect you are spreading alround in natural course is the sign of greatness. You are now swarmed with Devik Shakti (दैविक शक्ति) in their own form. They are not leaving you now at any time. The same was the condition when **Lord Krishna** came in human form. The difference is that you are in this state now, while He was in that state from the time He was born. The reason is that you are brought up in the present form by your Guru, while He was in this form from the beginning of His life or just as He was born. This stage will not come in future unless it is thoroughly needed. Your human form is nothing now but an idea of humanity.

9.19 AM (Note: An order issued by **Lord Krishna,** but not yet clear).

Now you ought to change yourself a little worthy of your own rank. Make yourself in a way that people may honour you. Disrespect to you means the dishonour for every one of us or for every liberated soul. I fear lest some punishment may be given to them who do not recognize

you, I mean what the duty of humanity demands. That is why I want to bring you at that level. Your present position, I mean the swarming of Devik Shakti commenced since two days back. This is the end of spiritual progress as I have dictated before. Be jolly now.

हज़रत क़िब्ला : बाबू **मदन मोहन लाल**, मेरी पोज़ीशन अब realize करें। और क्या कहूँ। मैं ज़िन्दगी में कृष्ण रूप बन गया था। इस से आगे कहना नहीं चाहता, बेअदबी है।

S.V. You have a call again from Southern India. Time is given.

राधाजी : मुझे अपने भाई की मौजूदा हालत देख कर बहुत ख़ुशी हुई।

S.V. : I offer blessings on Karuna Shanker. May he get a happy mate!

श्री कृष्ण जी महाराजः तुम ने जो तरीक़ा मुज़्महली या सुस्ती दूर करने के लिये ईजाद किया है, वो सब को बतला दो।

S.V.: Character is the sum total of one's own thought, which depends partly on one's own training and the surroundings one moves in. Surrender is the idea of depositing such things in the treasure of his Master, having

no concern with it. How it is attained, is the question. One phrase completes the idea - Give yourself up to the MASTER. How it is possible to do it? Adherence to His principle is the answer. This is the first step for the beginners. Rest I will take up tomorrow. B. **Madan Mohan Lal** Badauni is going to be changed now. He should give his time to his Guru and B. Ram Chandra, Sajadda Nashin. He should feel himself wrapped in spiritual power which is pouring on him; as long as he. lives here he should stick himself to it. I don't mean that he should leave it as soon as he is away from here. He (your Guru) has left the **brighter world** altogether. He avoids it unless the work of most important nature comes in, but you can't leave the service. You have not to live long in this world, still you worry yourself. I will fix the time (of service), you can't go beyond it. One thing is paining me to a great extent that you people don't leave your idle habits. Look here, you are responsible for all these things. First mould yourself and then say to others. Your Guru has given the latitude of indulgence to all of you. I will be more strict on this point. Sitting idle means to remain in waste in the basket. Look here, all the spiritual connections prevalent among the Hindus will be connected to **Lord Krishna**. The work is soon to come to you. **Birju** is of the opinion that nobody can break the spiritual connection except the अवतारी पुरुष (Avatari Purush) This is a fact. If he has got eyes to see, you tell him to do so.

10-6-45

हज़रत क़िब्लाः जितनी ईजादें अब तक हुई हैं, क़ाबिले-तहसीन हैं। मगर इस वक़्त की ईजाद मालूम कर के मेरा दिल उछल पड़ा। अब कोई गुत्थी ऐसी नहीं रह गई, जो इस से सुलझ न जाये। बाबू मदन मोहन लाल, यह बड़े ग़जब की ईजाद है, मगर अफ़सोस यह तरीक़े किस के साथ बरते जायें। ख़ैर!

तरीक़ा यह है कि जिस किसी को अच्छी और अछूती तालीम देना हो, उस का connection अपने दिल से करले और उस रिश्ते (connection) को अपने रिश्तए ख़याल में शामिल कर के भण्डार में ग़ोता दे दे। अगर ज़्यादा हालत पैदा करना मन्ज़ूर है तो अपने रिश्ते को जो उस के साथ किया है, अपने दिल पर खींच लावे और उस के रिश्ते को वहाँ पर क़याम की जगह दे। असल फ़ैज़ का चश्मा जिस का कि connection वहाँ तक ले जाया गया है, उबलता रहेगा और असल फ़ैज़ से बारयाब होगा। अज़ीज़ **रामचन्द्र**, तुम इस तरीक़े को और improve करो।

S.V.: This was the method in the early days founded by a great sage of India. All these things are coming to you taking a new shape or form according to time.

हज़रत क़िब्लाः **तरीक़ा** इस ने improve कर दिया और वो ज़रा सी बात है कि इस connection को उस जगह पर क़ायम कर

दे, जहाँ पर कि पीर की स्थिति है। पीर से मतलब यहाँ पर मुझ से नहीं है। बल्कि उस से है जो इस तरीक़े को करे। इतनी बात की मुझे भी आगाही थी और यह तरीक़ा मैं ने **रामचन्द्र** के साथ किया है। और इस ने मुझे (अपनी डायरी में) लिखा भी है कि पीर की धार चौबीसों घंटें दिल पर आई हुई मालूम होती है। इस आख़िर तरीक़े को बरतने के लिये आम तौर पर मुमानियत है जब तक वो (करने वाला) अपने ख़याल को मुझ से tally न कर ले।

इस ने और improve कर दिया। वो यह है कि जिस चक्र का खोलना मन्ज़ूर हो या फ़ैज़ देना मन्ज़ूर हो तो अपने ख़याल की धार और उस के (मामूल) ख़याल की धार वहां तक ले जाये और फिर उस को उस चक्र पर छोड़ कर अपने ख़याल को वापस ले आये।

आपस में बात चीत हो रही थी कि लोग जो नये आवें, उन से पहले कुछ रियाज़ कराना चाहिये। इस पर **हज़रत क़िब्ला** ने फ़रमायाः

हज़रत क़िब्लाः मैं भी चाहता था कि कोई अमल बता दिया जावे।

चुनाँचे बेहतरीन अमल इस वक़्त रामचन्द्र के दिमाग़ से बरामद हुवा। इस की तारीफ़ जहाँ तक की जाये, थोड़ी है। यह बातें दुनिया में यादगार रहेंगी और मुमकिन है कि इस बहाने मुझ को भी लोग याद कर लिया करें। बाबू **मदन मोहन लाल बदायूनी**, तुम को

हिदायत करता हूँ कि ऐसा ज़माना आना बहुत मुश्किल हैं। इस वक़्त से जितना फ़ायदा उठाना चाहो, उठा लो। मैं ने कई हस्तियाँ बना दीं। **तरीक़ा** यह है कि दिल में नूर का तसव्वुर बांधे और उस नूर के हिस्से को दिमाग़ की तरफ खींच कर ले जावे और वहाँ पर **ओम** कहे। उस के बाद उसी नूर को नीचे खींच लावे और रास्ते में **तत्** कहे, और फिर नाफ़ पर सत् की ठोकर लगावे। यह इस का पहला स्टेज है।

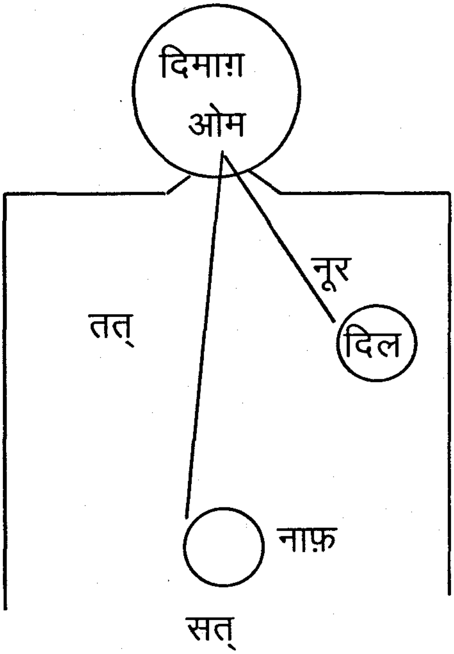

अब उस का दूसरा स्टेज यह है कि वो रोशनी जो दिल में क़ायम की थी, उस को घटाते-घटाते इस हद तक ले आवे कि उस की वुसअत पौन पाई (3/4th pie*) से कुछ कम हो और फिर उस को इसी तरीक़े से ऊपर ले जाकर दिमाग़ पर **"ओम"** और नाफ़ पर **सत्** कहे। अब इस का तीसरा स्टेज आता है जिस के बरदाश्त करने की क़ुव्वत, अगर क़ायदे में किया जाये, तो अच्छे-अच्छों में नहीं हो सकती। वो यह है कि पौन पाई के बराबर जो रोशनी की हद ले आये हैं, उस को इस क़दर negative (नफ़ी) कर दे कि सिर्फ़ उस रोशनी का ख़याल ही बाक़ी रह जाये। और उस को उसी तरीक़े से चढ़ाये और उतारे। अब इस का चौथा स्टेज सुनिये। जिस नूर के हिस्से को कम करते-करते आख़िर में सिर्फ़ रोशनी का ख़याल बाँधा गया है और उस को ऊपर चढ़ा कर नीचे उतारा गया है। अब इस ख़याल को ऐसा बाँधे कि रोशनी का ख़याल भी क़तई जाता रहे। और फिर जो कुछ रह जावे, उस को उसी तरीक़े पर चढ़ावे और उतारे। यह बात ख़याल में बांधना तो दर-किनार, समझ में आना मुश्किल है। और जिसका यह स्टेज होगा वो इस को करने ही क्यों लगा। आज़माइश दूसरी शर्त है।

S.V. Here comes your new discovery. Nature is now playing in you. The people generally play with her. Nobody can understand this idea and it is a new thing discovered by

---

F.N.* भारतीय सिक्कों में copper का सब से छोटा सिक्का। एक रुपये में 16 आने होते थे। एक आने में चार पैसे और एक पैसे में तीन पाई।

your Guru (I will call Him the inventor) that came into being since the creation of the world and this thing will go with you. Since the days of **Lord Krishna** nobody has got this kind of capacity. It was reserved for you.

11-6-45

श्री कृष्ण जी महाराजः शमाली हिन्द के मुनव्वर क़रने में तुम बहुत हल्का काम कर रहे हो। और अक्सर नहीं करते। उसी तरीक़े से तुम्हें रुजूअ रहना चाहिये जैसे जनूबी हिन्द में रहे हो।

हज़रत क़िब्ला : मेरी ज़िन्दगी तालीम करते ही करते गुज़री। और अब भी यह ही हाल है। यह और बात है कि मुझ से कोई मुख़ातिब न हो। मगर मैं ने पैरवी करने में कोताही नहीं की। इस वक़्त एक **नुस्ख़ा** हाथ आया, वो यह है कि अगर इन्सान अपने जज़्बे को क़तई ख़त्म कर दे, तो फिर कुछ करना बाक़ी नहीं रहता। मैं ने **राम चन्द्र** की हालत का बहुत मुशाहिदा किया है। यह बात मैं ने उस में दरजा कमाल की पाई है। हाँ, अब इस की नक़ल कैसे की जाये जो आख़िर में असल हो जाये। **तरकीब** यह है कि अपने क़ुव्वाए बातिनी को ख़ामोश करता चले।

बाबू **मदन मोहन लाल वकील**, बदायूनी, इस वक़्त अपनी हालत देख लें। इस ने (RC) रात भर इसी क़िस्म की उन्हें तवज्जो दी है। यह एक बहुत बड़ी नैमत है। मगर इन की हालत ख़्वाबीदा

तरीक़े में है। इस का मज़ा बहुत दिनों बाद आयेगा। अगर सच पूछो तो बाबू **मदन मोहन लाल**, तुम्हारा काम इस ने (RC) ख़त्म कर दिया। मज़ावलत बाक़ी है, यह होती रहेगी।

S.V.: You have made him (M.M. Lal of Badauni) alround complete in a day. His Vrittis have become uniform. It will take a great time before it comes to a state of spirituality, we so long desire. He was in a state of childhood when he came to you some days ago.

12-6-45

हज़रत क़िब्लाः ऑर्गनाईज़ेशन का मसला, मुद्दतों से दिमाग़ में घूम रहा था। मैं इस के दिमाग़ की कहाँ तक तारीफ़ करूँ, इस ने मालूम कर लिया। जिस उसूल को मद्देनज़र रखते हुये इस की discovery हुई है। एक ख़ानदान में, मुमकिन है (मेरा मतलब पढ़े लिखे लोगों से है) कुछ आपस में अन बन मामूली तौर पर हो जावे, मगर आख़िर को, या वक़्त पड़ने पर, सब एक हो जाते हैं। वजह यह है कि उन का आपस में - ख़ूनी ताल्लुक़ रहता है। यह ही हिसाब यहाँ का समझना चाहिये। आपस में, मुमकिन है कुछ difference of opinion पड़ जाये जो सही नतीजे पर आने के लिये ज़रूरी है। मगर आख़िर में सब को एक हो जाना चाहिये। एक क़िस्म की तवज्जो की धार जो हर तवज्जो से मुख़्तलिफ़ हो, सब में प्रवेश करना चाहिये और उस को अख़लाक़ का जुज़ बना देना

चाहिये। अब वो क्या चीज़ है, यह practically बताया जा सकता है।

हज़रत क़िब्लाः इतनी ईजादें हो गईं कि बेशुमार, और अब भी जारी हैं। मगर अफ़सोस कि कोई अमल नहीं करता और न रुहानी और अख़लाक़ी बीमारी दूर करने की कोशिश करता है। इन ईजादों से क्या फ़ायदा अगर अमल न किया जावे। **मुज़्महली** का **नुस्ख़ा** अगर किसी ने किया भी तो बतौर फ़र्ज़ अदायगी। कोशिश नहीं की गई। इस मुआमले में अगर **रामचन्द्र** की मिसाल ली जाये या ख़ता दी जाये तो ठीक नहीं होगी। इसलिये कि वो मए जुम्ला ताक़तों के खिंचा रहता है। इस का असर जिस्म और चेहरे पर पड़ना लाज़मी है। मैं चाहता नहीं हूँ कि इस क़दर वो खिंचा हुवा रहे और अक्सर मुझ को उतारना भी पड़ता है। उस की मुज़्महली की वजह खिंचाव है। मगर यहाँ लोगों में यह कैफ़ियत पैदा नहीं हुई, इसलिये उन को लाज़िम है कि इस अमल को करें।

दूसरा तरीक़ा इस मुज़्महली दूर करने का और ईजाद कर दिया जो सब से सहल है और हर शख़्स कर सकता है। वो यह है।

तरीक़ा : कि अपनी ख़ास ताक़त जो हर शख़्स के पसे-पुश्त है उस (ताक़त) से अपने चहरे पर तवज्जो दे, आँखें बचाये रखे, और ख़याल करे कि यह ताक़त चहरे पर बशाशत ला रही है। इस से फ़ायदा होगा। एक बात मैं हर शख़्स से कहता हूँ बल्कि बाआवज़े दुहल कहता हूँ कि अपनी अख़लाक़ी हालत के सम्भालने में हर

जिज्ञासु शुरु ही से कोशाँ रहे। कोई बात मुँह से न निकाले जो दूसरों को नागवार हो, और न कोई ऐसी हरकत करे जो दूसरों को नापसन्दीदा हो। इन दोनों बातों का ख़याल रखते हुये अख़लाक़ के सुधारने में लग जाना चाहिये। यह initiative उसूल हैं। इस पर कोई ख़याल नहीं रखता। मैं रुहानियत का इस क़दर दिलदादाः नहीं रहा जितना कि अख़लाक़ का। क़ुव्वाए बातिनी ख़ामोश करने की कोशिश कोई नहीं करता। कोई शख़्स अगर धुरपद् (ध्रुवपद्) तक अपनी रसाई कर ले मगर इख़लाक़ी कमज़ोरियाँ उस की बाक़ी रहें तो मैं इमझता हूँ कि अब तक उस को अस्ल जौहर दस्तियाब नहीं हुवा। मुकम्मिल अख़लाक़ उस को कहते हैं कि हर चीज़ जो इन्सान में है, एत्दाल पर आ जावे और वो ही कैफ़ियत इख़्तियार कर ले। अगर इस का भी अभाव कर दे तो उस की कोई बराबरी नहीं कर सकता। यह बात ज़रूर मुश्किल से नसीब होती है। मगर इस के यह मानी नहीं कि हिम्मत न बांधी जाये। तवज्जो से भी यह बातें पैदा हो सकती हैं।

S.V. I want an addition to your this very method. Whenever a man thinks or begins doing this method, he should connect himself with the great power within you. While doing this method, one should think himself connected thoroughly with the power.

13-6-45

S.V. : The time is fast approaching when your supremacy will be established everywhere. We are all doing the same work. We are digging the grave to bury the elements we do not desire. Will of God must come to pass. I find a few persons having enmity with you. I allow you that whoever comes to you in a tedious way, you can put him to the point of destruction.

हज़रत क़िब्लाः बाबू **मदन मोहन लाल**, इस वक़्त मेरी तबीयत ने ऐसा ज़ोर मारा कि मुझे **रामचन्द्र** को सख़्त हुक्म देना पड़ा कि **मदन मोहन लाल बदायुनी** की **कुबरा** की हालत इसी वक़्त एक मिनट के अन्दर मुकम्मिल कर दी जाये। चुनाँचे ऐसा ही किया गया। ख़ुदा मुबारक करे। वकील बदायूनी अपनी डायरी हर माह भेजते रहें।

S.V.: It is you and you alone who can bring the level of perfection in a minute's time. He (मदन मोहनलाल बुदायूनी) should pass a night with you today with light meals. Satsang must be finished at 10.00 PM today and people should leave you by that time.

हज़रत क़िब्लाः बाबू **मदन मोहन लाल**, इस **(RC)** से तेरा कोई राज़ नहीं छुपा। इस वक़्त इस को मैं ने इस लिये बुलाया था

कि इस के मेदे को कुछ सही किया जाये। जो अमल कि मैं ने किया था, इस की समझ में आ गया। यह अमल अल्फ़ाज़ में बयान नहीं हो सकता।

S.V. : I give you all the work in your hand and make you responsible for it. Whoever does his work you will be responsible for it. The work is suffering.

हज़रत क़िब्लाः असल मार्ग सहज मार्ग है। उर्फ़ियत कुछ कहने में अच्छी नहीं मालूम होती।

14-6-45

हज़रत क़िब्लाः मैं ने mental pressure रोकने के लिये यह तरक़ीब की है कि **रामचन्द्र** के जो काम सुपुर्द है, automatically होते हैं। इस के मानी यह नहीं होंगे कि अपना काम एक एक कर के न ले सकें।

15-6-45

हज़रत क़िब्लाः बाबू **मदन मोहनलाल** वक़ील बदायूनी को हिदयत कर दी जाये कि तीन माह तक कोई पूजा किसी क़िस्म की न करें। बल्कि अपने हालात जल्द-जल्द लिखते रहें।

S.V.: Registration must take place. All the rules of the Society must be put before me. I enjoy full authority as to the matter. Sooner the better. In the form to be filled in by the members of the Society, there will be two branches, moral and spiritual. One must move according to the times. No Society can stand unless it is brought according to the general tendency of the people. The idea of teaching under the shade of the tree is to be forgotten now, unless the Society is perfectly regularized.

17-6-45

हज़रत क़िब्ला : वक़्त 10.00 AM मैं ने बाबू मदन मोहन लाल को और तेज़ कर दिया, यानी (उनकी) ऐसी ताक़त बढ़ा दी कि जिस पर (उन को) excitement हो। उस पर उस का फ़ौरन असर हो जाये। मुझे उन की ख़ुशी रखना है। पावर लिये जायें। बाबू **ईशर सहाय** की सैरगाह विलायते **उलिया** है। और यह इसी वक़्त की गई। ज़रूरत कुछ ऐसी लाहक़ हो रही है कि इन को जल्द पूरा कर दिया जाये।

हज़रत जबराईलः ईश्वर का हुक्म है कि कुल दुनिया को अपने दायरे में ले लो और जो काम कि हिन्दुस्तान में किया है, वो ही वहाँ शुरु कर दो।

हज़रत क़िब्लाः यह वह्यी है, इस की शुरुआत तक़रीबन तीन

रोज़ पहले से हो चुकी है जब कि मैं ने automatically काम तुम से लेना शुरु किया था। जिस तेज़ी से काम शुरु हुवा था उस में कुछ कमी भी कर दी। इसलिये कि दिल पर असर पड़ रहा था और बवजह कमज़ोरी बार था।

18-6-45

S.V. : To go beneath the lower strata (परत, तह, तबक़) of humanity is spirituality. Who reaches there? One who becomes zero. Above that there is nothing but an idea. Finding almost disappears.

श्री कृष्णजी महाराजः मैं नहीं चाहता कि सन्यासी रहें। **शंकराचार्य** की प्रणाली ख़त्म करना चाहता हूँ। मैं ने तुम्हारे (RC) लिये इन्तज़ाम कर दिया है। नौकरी की ज़रूरत नहीं रहेगी। जब तुम्हारे गुरु कहें, छोड़ देना। हाथ पैर धुनने से कुछ फ़ायदा नहीं। कमज़ोरी बढ़ाना है। ईशरी काम में रुकावटें पड़ रही हैं। तुम को वक़्त नहीं मिलता।

राधाजीः भाई (RC) मैं वायदा करती हूँ कि तुम्हें कभी तकलीफ़ न होने दूँगी। अब जा रही हूँ। तुम्हारी क़द्र बाद को मालूम होगी।

S.V. :You are starting a new religion, destined to be so by the governing Agency. You have quashed all desires, so you will be happy. The world - work is coming to you and it has already begun in its light form. You are not feeling yourself at all what you are and that is the sign of greatness. Happy are those who avail of the time.

19-6-45

हज़रत क़िब्ला: है किसी में हिम्मत जो इस क़दर (सख़्त) तालीम के लिये तैयार हो। शरायत यह हैं कि 25 साल तक **ब्रह्मचर्य आश्रम** में रहे। जिस्म को बलवान बनाने की कोशिश करे। उस के बाद 5 बरस तक ख़ानादारी मे रहे। औलाद हो जाने पर कुछ अरसे तक शौहर और ज़ोज़ीत के ताल्लुक़ात बमूजिब धर्मशास्त्र निभाये और इस दौरान में अम्ल और शग़्ल करता रहे। मगर तन्दरुस्ती का क़दम-क़दम पर ख़याल रखे। चालीस बरस तक कमाल मेहनत इल्मे हुज़ूरी में करे। जब इक्तालीस्वाँ (41) साल शुरु हो, ख़ानादारी को छोड़ दे। गुरु के घर पर क़याम करे और सिवाये इस के और कोई ताल्लुक़ नहीं रखे। अब अज़ीज़ **रामचन्द्र** की सोची हुई तालीम का आग़ाज़ होता है। **तरीक़ा** यह है कि हर चक्र पर अपनी पूरी ताक़त से इस तरह पर रुजूअ हो कि गोया उस के एक एक परमाणु में ज़ात की पूरी ताक़त भरी जा रही है। इस में अरसा लग जावेगा। हर परमाणु अलेहदा-अलेहदा लेना पड़ेगा और कुलियतन् साफ़ करना पड़ेगा। इसी तरीक़े से हर चक्र को एक एक कर के ले। जब कुल

चक्र **पिण्ड** के ठीक और साफ़ हो जायें तब **ब्रह्माण्ड** के चक्रों को ले ले। उस के बाद **पार ब्रह्माण्ड** मण्डल में पहुँचे और उस के मक़ामात भी इसी तरीक़े से (एक-एक) ले ले। जब यहाँ तक complete हो जाये तब जिस्म के हर ज़र्रे को ले और उन पर उतनी ही मेहनत करे। जब सब ज़र्रात जिस्म के साफ़ हो चुकें तो उन में एक भाव पैदा कर दे यानी उन को तह से ले कर चोटी तक एक ही भाव दिखाई पड़े। जब इस को complete कर ले तब उस कुल हालत को **धुर** तक सम्मिलन कर दे। मैं समझता हूँ कि अगर ज़िन्दगी में यह तरीक़ा किया जाये तो शायद एक आदमी कुल उम्र में बन सकेगा। मगर जो बनेगा उस की मिसाल नहीं होगी।

अब मेरा **तरीक़ा** सुनो। मैं **राम चन्द्र** को अपनी ज़िन्दगी में मुकम्मिल कर चुका था। मगर इस क़िस्म की मेहनत नहीं की, जैसा कि ऊपर तहरीर किया गया है। जब इस को हालते कमाल पर पहुँचा दिया और जिस्म छोड़ चुका तब इस तरफ़ रुजूअ हुवा और काम अपना बराबर करता रहा और इस में असर होता रहा।

जब ज़रूरत लाहक़ हुई और कामों की भरमार शुरु होने लगी और इस को (RC) जुनूबी हिन्द का दौरा करने के लिये हुक्म हो गया तब मैं ने यह तरीक़ा इस के साथ किया था। और वो इस तरह पर कि अपने आप को इस के हर ज़र्रे में से निकालता रहा। हत्ताकि कुलियतन् मुकम्मिल हो गया। जब इस काम को मैं ने कर लिया तब तीन घन्टे में शुरु से आख़िर तक वो ही कैफ़ियत पैदा कर दी

जो ऊपर लिखी आ चुकी है। इस का इशारा कहीं पर मैं ने दिया भी है मगर उस को आज वाज़े किया। यह काम ज़िन्दगी के बाद ही अच्छा हो सकता है। ब्रह्मचर्य वग़ैरः के क़वानीन की रोकथाम ज़िन्दगी के बाद ही की जा सकती है। इसलिये कि गिराँमाया हिस्साए ज़िन्दगी इसी में ख़र्च हो जायेगा। यह कुल काम एक दम से भी हो सकता है मगर इस की तौफ़ीक़ शायद ही किसी में मिलेगी। अगर ग़ौर किया जावे तो इन्सान के हर ज़र्रे में वो ताक़त मौजूद है जिस का जवाब नहीं। इस से अच्छा एक और भी तरीक़ा है। वो यह है कि ज़ात को उस की तरफ़ push कर दे मगर इस झटके को बरदाश्त हर शख़्स नहीं कर सकता। मैं यह भी कर चुका हूँ। इस के करने की मैं मुमानियत करता हूँ।

20-6-45

S.V.: I have mastered the philosophy of **Rishi Patanjali** and given quotations from that book in my writings as well. If I speak the truth, who knows, the people especially the Brahmans may pounce upon you. He was a man of sound knowledge and devoted himself thoroughly to the study of books, practising only a few things. I differed widely from him in some respects. If you meditate a little on him, you will know his condition not brought (out) in writing. **There is no Patanjali in the brighter world**. He could not free himself from endless circle of his work. His knowledge was not a practical one. I advise you not to rely

upon the methods totally, given in his books. The book is of course worth keeping. It has to some extent the methods adopted by others. You are soon going to take up that work. I prefer your philosophy regarding **the master cell** and his **two subordinates,** but you have not yet thought much about that. It will reveal the whole secret if it is prepared by you. The questions given by your Guru, you have not yet attempted to solve them. It is your duty now to give a new turn to these things.

21-6-45 9.15 AM

चैतन्य महा प्रभु : तुम मुझ से काम क्यों नहीं लेते। मैं ने तुम में अपने आप को लय कर दिया है। मैं दुआ देता हूँ कि तुम्हारे **मिशन** का काम अच्छा रहे और स्वामी (**विवेकानन्द**) जी की राय से इत्तफ़ाक़ करता हूँ, यानी रजिस्ट्रेशन करा दिया जावे। तुम को अपनी हालत की ख़बर नहीं। तुम्हारे हुक्म हम लोगों पर फ़र्ज़ हो जाते हैं। और यह सब तुम्हारे गुरु की दया है। ऐसा गुरु पैदा नहीं हुवा। उन की हक़ीक़त कोई न जान सका। अब देखें जिस की आँखें हों। **स्वामी जी** अपने काम में मसरूफ़ हैं। वो अब तक ऊपर नहीं पहुँचे और तुम्हारे गुरु भी काम कर रहे हैं। वो मुमकिन है दो तीन रोज़ न आ सकें । लिहाज़ा मुझ को बुला लिया करो।

S.V.: He is totally absorbed in you. The standard of life you lead will be wanting at all places of spiritual

hemisphere. There are liberated souls in the brighter world who cannot match you.

23-6-45

हज़रत क़िब्लाः शाम के वक़्त ज़िक्र था और यह ज़िक्र अज़ीज़ **रामचन्द्र** ने किया था कि मेरी हर वक़्त स्टेशनरी हालत रहती है। और बाबू **मदन मोहन लाल** को भी इस का इश्तियाक़ पैदा हुवा। आप करें। **तरीक़ा** यह है कि हर वक़्त Nature को देखता रहे यानी उस की सादगी और भीनापन। उस का अन्दाज़, उस की यकसानियत पर, हर वक़्त नज़र रहे और ख़याल रखे कि यह बात मुझ में आ रही है। और यह लाज़मी है कि इस का तसव्वुर भी रहे कि अन्दर और बाहर सब यह ही हालत है। और इस ख़याल में हर वक़्त रहने की कोशिश करे। लेकिन **"(ईं सआदत बज़ोरे बाज़ू नेस्त, गर न बख़शद ख़ुदाये बख़शन्दाः।"** ***(अर्थातः यह सौभाग्य बाहूबल से प्राप्त नहीं होता। यदि बख़शनहार (दानी, क्षमा करने वाला) परमात्मा की कृपा न होती।)*** जो शख़्स क़ुत्ब से आगे जा चुका है उस को करने की मैं इजाज़त देता हूँ। यह तरीक़ा इसी का (RC) ईजाद किया हुवा है। और बिल्कुल ठीक है। फ़र्क़ इतना रहेगा कि यह एक point को ले कर चला था और उस को छोड़ा ही नहीं जब तक उस के छूटने का वक़्त न आ गया। और उसी से सब कुछ हो गया। लोग अब अभ्यास करें जो इस के मुश्ताक़ हैं। इस point **(शर्णागति)** को भी मैं लेने के लिये मना नहीं करता। मतलब काम बनने से है, जिस तरह चाहे बनाले। तरीक़े दोनों ठीक हैं।

25-6-45

हज़रत क़िब्लाः अज़ीज़ रामचन्द्र ने जज़्ब की रंगत सिलसिले से ख़त्म कर दी। इस की तवज्जो को झुलसी हुई आग या गरम रेत की गरमी से मिसाल दी जा सकती है। यह एक अछूती बात है जो इस ने शुरू की है। **जज़्ब तरक़्क़ी के लिये लाज़मी नहीं रहा।** यह ज़रूर है कि इस क़िस्म की तवज्जो वही दे सकेंगे जो इस की तवज्जो से काफ़ी फ़ायदा उठा चुके हों। शुरू ही में ज़ात की कैफ़ियत सीखने वाले पर सरायत करेगी। मैं इस वक़्त इस की तवज्जो देखता रहा। बिल्कुल ख़ुलूस था और ज़ात की कैफ़ियत अच्छी झलक रही थी। चीख़ पुकार अब ख़त्म हो गई। सुलूक से वो काम हो सकता है जो जज़्ब से नहीं हो सकता, बशर्तेकि वो कैफ़ियत हो।

नोटः यह तरीक़ा तालीम अल्फ़ाज़ में ब्यान नहीं हो सकता। ज़रूरत पर समझाया जा सकता है।

S.V.: It is a peculiar thing in your life and quite a new thing in the beginning for everybody. So far the people attempted the way through attraction which you call "जज़्ब". Really you brought forth a new religion. It is the starting point which nobody can imagine yet. Its efficacy will be found in the long run. The defects which you often think of among you will not be found anymore, if a person comes to you in the beginning for training.

हज़रत क़िब्ला: इस से अच्छा तरीक़ा हो ही नहीं सकता कि जो मक़्सद है उस को शुरू ही से ले लिया जावे।

S.V.: Light will be the part and parcel of this method, which will naturally attract one to this side. Stages will go side by side in each step.

30-6-45

ऋषि लंका: अभी मालूम हुआ कि तुम लोगों को छोड़ मतलब आप के भाईयों से है, और के पास कोई ड्युटि नहीं रही। मेरे पास **सीलोन** का काम है। गो ख़ास ड्युटि इलावा इस के मुझ को मिल जाया करती है। मगर मेरा दायरा सिर्फ़ **सीलोन** का है। कुछ **जनूबी हिन्द** के हिस्से में है।

S.V.: The extreme point of concentration means death. This is for you only.

8-7-45

S.V.: The religion is quite a new one. You have changed it altogether. Its development will take time. There is a great difficulty in the way that the people who come to you don't want to do their own labour.

This is why only one will remain at work. They follow your example in every way, and in one respect specially, that is your idle habits. They do not know your condition. Remove these things from them altogether. A man going (by) leaps and bounds stops a little and forsakes enthusiasm, because he does not exercise his will to reach the point. A great regard is to be paid to leave the habits contrary to the level of spiritualism. They do not try to check themselves from the wrong points they are going.

9-7-45

धन्वन्तरी जी: अफ़ियून (Opium) का सत अगर आग में डाल कर धूनी दी जाये तो नसें पेट की जल्द मुलायम पड़ जाती हैं। **काला भंगरा**, (Black Eclipta Fraling) वज़न पैसा भर (weight one pice) कच्ची शक्कर के साथ मिला कर सुबह को फंकी लगाई जाये। तुम्हारे जिगर की ख़राबी एक अरसे से चली आ रही है। उस के फ़ेल ख़राब होने से दस्त और ज़ौफ़े मेदा शुरु हो गया। काला भंगरा अकसीर दवा है।

S.V.: I am ordering **Dhanwantriji** to attend you at times. He was the **First Rishi** of his times who discovered medicine. The history as to the point that he belonged to **Kaistha class** is correct. He was the **inventor** of the **Vedic** sort of treatment. The diseases, of course, were not so many

at that time. The health was generally good. The hypnotic sort of treatment came later on. The **division of caste system** when came into being, the Kaistha class rose above everything and devoted thoroughly to this sort of science called brain. They have wonderful discoveries, the time destroyed them. You will be surprised, if I say that the **inventor of Baan Vidya** (बाण विद्या) was a Kaistha, which in course of time developed. It is a separate class and have really no connection with Jatis (ज़ाति). The first man who gave birth to the spiritual philosophy was a Kaistha. The Nature has kept this part for the Kaisthas only, because they have developed themselves to the very core of Almighty where the things started. This thing cannot disappear from them ever and after. The spiritual philosophy cannot develop unless they concentrate themselves towards it. Society is crippled without their help. It is a great blunder on the part of the Jatis (क़ौमें) who do not give them field to work on. Who was the **founder** of **Raj Yoga** before it came to the form of book? A Kaistha. Every big religion was started by the Kaisthas. Mahatma **Buddha** is an example. The scientific discoveries are all made by Kaisthas. Great sages of the world were among the Kaisthas. Your Guru is an example. Now take yourself as an example for starting a new religion. Really speaking you have dissolved all the religions into one and overhauled the system of Raj Yoga started or invented by a Kaistha fellow. I say nothing about me as I

belong to the same community. Brahmans generally have taken advantage of their liberal mindedness for their supremacy to be established in India. They are now being swallowed by the same community who remained always friend with them even in the days of ruling chiefs in the Mohammaden period. They have saved them (Brahamanas) from losing their own religion. They belong to the same strata of the spiritual type of class but they are proving themselves far and above. The reason is that I had stated above---their "liberal mindedness" in the beginning. There was a general fallacy among Kaisthas that they never cared to write what they had thought of. The same thing when fell into the hands of others, they began to bring it into book form in their name. They also coloured these thoughts to bring it into their own fashion.

When **the world was brought into being** the different types of classes issued forth from the fountain. There was no Jati, I mean the different classes of persons required for a colony. The **first movement** that gave birth to a person was **Chitra Gupta**(चित्र गुप्त) He had the particles of wisdom in wholesome state. The stream then began to flow towards the other. If I call **Chitra Gupta** ji the fountain of **Wisdom**, it will be totally correct. His Santans (सन्तान) as we are, have that sort of wisdom.

The starting of Alphabets was the outcome of their deep thinking. Decimals in Mathematics was the result of their mental play.

The **Sapt Rishis** (सप्त ऋषि) what you call are all Kaisthas.

11-7-45

S.V. : Your blood circulation remains stopped for the most part of the time. The condition being stationary tells much on your health. Stimulant is necessary for your health. You don't realise sometimes, your breathing stops and this remains for the most part during day and night. Bodily exercise is necessary. Running is useful. **Kala Bhangra** (काला भंगरा) is the medicine for you and you alone.

12-7-45

धन्वन्तरी जी : चन्द दरख़्त हर घर में होना चाहिये। ताकि हवा साफ़ रहे। इस ज़माने में हवा में ऐसे अज्ज़ा कम हो रहे हैं जो तन्दुरुस्ती के लिये मुफ़ीद हैं। तुम को चाहिऐ कि तुम अपने यहाँ दो दरख़्त ज़रूर लगाओ। इस के बहुत फ़ायदे हैं। **तुलसीदल** (Basil Ocymum Sanctum or Artemisia Indica), **देवना मर्वाह** (न्याज़बू) यह दरख़्त अगर बच्चों के पास, अगर गमले में रख दिये जावें तो उनको बहुत कुछ बीमारी से नज़ात मिल जाती है। **जनेऊ**

पहनना मुफ़ीद है। इस से रिश्ता* की बीमारी नहीं होती। अगर यह दरख़्त कसीर तादाद में रखे जावें तो उस घर में हवन की ज़रूरत न रहेगी। **पीपल** (Ficus Religiosa) का दरख़्त पूजनीय है मगर घर के अन्दर नहीं लगाना चाहिये। रात में इस में से ऐसी हवा निकलती है जो तन्द्रुस्ती के लिये मुज़िर है। दिन में इस के साये में बैठने से ख़यालात की गरमी खिंचती रहती है। घर से दूर इस को लगाना चाहिये। **नीम** (Ficus Margosa) हर हालत में मुफ़ीद है। इस के साये में रात में रहना भी मुफ़ीद है।

काले भंगरे में चन्द काली मिर्चें ज़रूर डाल ली जावें और पीस कर शक्कर मिला ली जाये। **बेल** (Ficus Crataeva) की पत्ती **कोढ़**(Leprosy) में मुफ़ीद है। अगर कोढ़ी (Leper) **गंगा का रेत** कुछ दिनों फाँके और फिर इलाज शुरु करे तो जल्द फ़ायदा होगा। मगर यह ख़याल रहे कि उस रेत में हड्डियों के ज़र्रे नहीं होना चाहिये।

अगर दूध फाड़ कर तुम इस्तेमाल करो तो ज़्यादा मुफ़ीद रहेगा। **दूध को नमक से फाड़ना सख़्त ग़लती है**। लीमूँ (Lemon) से फाड़ना अच्छा रहेगा।

Foot Note: * रिश्ता: एक बीमारी जिस में पाँव में से तागे (धागे) की मानिन्द एक बारीक सा जानदार कीड़ा निकलता रहता है। नारुआ या नारू रोग।

13-7-45

धन्वन्तरी जीः बूटियों की पहचान यह है। जिस का **पीले रंग का फूल** हो वो **पित्त** के मर्ज़ों में मुफ़ीद रहती है। **सफ़ेद रंग** के फूल वाली बूटी अकसर बल्ग़म में मुफ़ीद पड़ती है। जिस पत्ती में **सब्ज़ी** (हरापन) ज़्यादा हो, इस हद तक कि स्याही (काली) मालूम हो, वो **मेदा** के लिये मुफ़ीद है। लुआबदार चीज़ें मेदा को मुफ़ीद नहीं होतीं। इन का हज़म करना मुश्किल होता है। अगर उस में हाज़मे की ताक़त किसी दवा से बढ़ा दी जाये, तो उस का वो असर दूर हो जायेगा जो मेदा के लिये मुज़िर है। जिस किसी चीज़ का सख़्त छिलका हो उस का मग़ज़ **रियाही मर्ज़** और मेदा के लिये मुफ़ीद होता है। **सुर्ख़ फूल** वाली बूटियां अकसर मुज़िर होती हैं। मगर वो भी ख़ास मर्ज़ों के लिये गुण रखती हैं और अकसर सम्मियत (ज़हरीलापन) दूर करने के काम आती हैं। दरख़्तों की छालें जो तने से चिपटी रहती हैं, वो लेप के काम आ सकती है। उभरी हुई छालें फोड़ा फ़ुन्सी और हिद्दत दूर करने में मुफ़ीद हैं।

S.V. : The ordinary standard of a man is to become zero. Above that is the condition that comes hundreds of years after, when the wave of Almighty runs for special work. The ways and customs of Hinduism are generally (based)upon some scientific and hygienic bases. A great regard is paid to the above. Most of the things are introduced that are not needed in the religion but upon some hygienic

principles. Such is the case with Janeou(जनेऊ). The Brahmins, of course, made it the symbol of high born faculties.

धन्वन्तरी जी: काफ़ूर(Camphor), **सन्दल** कुटा हुवा, तगर; इन सब को कूट कर रख लिया जावे। इस की धूनी देने से दिमाग़ की बहुत सी बीमारियाँ चली जाती हैं। **अगरबत्ती** बनाना चाहो तो किसी चीज़ में मिला कर इस की लुग्दी बना ली जाये और किसी चीज़ में चिपका ली जाये। **चन्दन** ज़्यादा होना चाहिये। तगर (Incense) अन्दाज़ का डाल लिया जावे जिस में उस का रंग आ जावे। **सरसामी** (सन्निपात रोग) हालत में '**अगर**' (Aloe) मिला कर बत्ती बनाई जा सकती है। बत्ती सींक में नहीं लगाना चाहिये। इस में एक माद्दा होता है जो दिमाग़ में हरारत पैदा करता है और मुज़िर है। **बाँस** अच्छा है। **तुलसी** दल की पोटेन्सी (potency) अगर बढ़ा दी जावे तो हर बुख़ार के लिये नाफ़ेअ है। अनुपान ज़रूर है और यह हकीम की लियाक़त पर है।

14-7-45

श्री कृष्ण जी महाराजः तुम ने तरक़्क़ी की इन्तहा कर दी। आगे रोकने की ज़रूरत है।

S.V.: Everything now comes to you in the form of Vibrations.

19-7-45

हज़रत क़िब्लाः बाबू **हर नरायण** का **सुग़रा** मुकम्मिल कर दिया था और यह हुक्म दिया था कि इन को तीन रोज़ के अन्दर उस हद तक तैयार कर दें जो मेरी मन्शा है। मगर वक़्त ने उन को इजाज़त न दी। चुनाँचे यह बात उन्हीं पर छोड़ दी गई। अगर इस हालत से पेश्तर **कानपुर** गये होते तो यह एहसास और तबीयत न लाये होते। तजुर्बा उन से बेहतर हस्तियों के ख़िलाफ़ है। थोड़े दिन और गुज़रने दो।

S.V.: Get your covering veil aside. Tear it off altogether and prepare yourself for the work ahead. Change is bound to come. There is a havoc now wrought by you last night.

हज़रत क़िब्लाः माता प्रशाद तुम ने ज़िन्दगी का एक बड़ा हिस्सा बरबाद कर दिया। मगर ख़ैर, सुब्ह का भूला अगर शाम को आजावे तो भूला नहीं कहना चाहिये। जिस बुज़ुर्ग (स्वामी **शंकरानन्द** जी) के यह पास रहे, उन का मोक्ष तक नहीं हुआ। इस दुनिया में (अपने आप को) बेदाग़ बचाना मुश्किल है। मर्द वो है जो अपने जज़्बात को उस तरफ़ राग़िब रखे। यह ज़रूर है कि ज़माना मेरे बाद अंधेर और तीरा व तार रहा मगर चन्द असहाब ऐसे निकले जिन ने मुझ को नहीं छोड़ा।

मरहबा इस हिम्मत पर! अपनी तबीयत उस तरफ़ रुजूअ रखो और काम में लग जावो। गया वक़्त फिर हाथ नहीं आता। तुम को **राम चन्द्र** से ज़्यादा अज़ीज़ और दोस्त नहीं मिलेगा। इस ने सब कुछ मेरे अर्पण कर दिया और मैं ने भी कुछ नहीं छोड़ा जो दे न दिया हो। इस की हालत ख़ुदा ही जानता है। आप को ख़बर नहीं कि इस को (**अज़ीज़ रामचन्द्र**) किन किन बुज़ुर्गों ने अपना सज्जादा नशीन किया है। सब बुजुर्गों की निगाहें इस की तरफ़ हैं। यह वक़्त अब बार-बार नहीं आ सकता। जितना चाहो फ़ायदा उठा लो, और न यह हालत आयंदा मुद्दतों तक पैदा होगी।

23-7-45

S.V.: 9.30 PM. Accept my heartfelt sympathy to the workers of the Mission. This is the will of over- ruling Providence to have such a **Sanstha** permanently run. This is not at all the play of human brain. The scheme I have given is Godly one. There may occur controversies on certain points but it does not mean to have any effect on it. I will guide all along.

I come now to the other point. The psychology of human brain. The poisonous effects have been thrown much by the general public to gain their selfish ends, with the effect that the whole of the atmosphere has grown in tumult and disorder. The very waves in atmosphere are touching

the brains of God's creation; and there are people in this world who increase it by their will force. What is our duty now, is to clear it off altogether. I also allow you to deal strictly with the general public in this matter so as to give them a state of forgetfulness. The work is a very big one but you will have to do it in your lifetime and after it. You enjoy the full powers to make it round to the correct point. They are burrowing holes in the atmosphere.

I had a talk with **Lord Krishna** about you. He has a very good opinion about you but it is very sad that the people among yourselves are not following the path you have moved on. They are telling their own tales. I have often warned you. For your further guidance I advise you not to give atmospheric power without considering a good deal, to anybody. Whenever once the connection from the atmosphere is formed, it cannot be easily broken by anybody except you who enjoy the unlimited powers. Who knows there may not come a man like you, who may have at his command the union and disunion of this chain. You should remain alert always with these things. It comes under the definition of impertinence if you persist upon (in) doing a certain thing that is not required by Nature. Cheaply earned is cheaply gone. I don't mean the power you transmit in ordinary routine. I mean the special thing if you impart. The difficulty is that we do not let go your view-points.

(This is in answer to my question). This I assure you that you are never wrong in your view-points. They have connection with our hearts and have full guidance. These are the directions not for you alone but for your coming generations as well.

25-7-45

S.V. : 9.25 PM: You are at the apex. He (R.C. Saksena) has been selected for Sourthern India. He will remain directly under my control. His connection will remain solely with me. I shall be a guidance power on him. He should think of me and me alone at needful times. The mode of his training will follow from my side. Meanwhile he should try to be an extempore speaker. If you think of him, having regard to my direction, it comes to the same thing. We are in full power in him just like the ingredients of the medicine compounded, if taken, cures the diseases. If he thinks of my Lord, it will serve the same purpose, but I want to take him off for myself; therefore this direction. You are representing me. The **Marg** is the **Sahaj Marg** (सहज मार्ग) and the same rules you will follow. The same training you will give to others. When the time comes for Sourthern India, I will give the directions. I don't mean, you don't remember Lalaji. Think Him as my Lord. Books to be given for reading of different philosophers. He should think

himself busy with the work coming to him after certain preparations. I will come here to give him power directly. He should organize the **Mission** founded in the name of my Lord. This will continue as such.

26-7-45

S.V.: I am preparing him very soon for the work. Be a bookworm. Be happy. Going back.

27-7-45

धन्वन्तरी जीः ख़ूब कलाँ (Black Berry seed) पॉव भर एक हांडी में बन्द कर के साये की जगह में ज़मीन में दफ़्न कर दे। चालीस रोज़ के बाद उस को निकाले और ककरौंदा के अर्क़ में पीस कर दो-चने के बराबर गोली बना ले। ख़फ़्क़ान* के मरीज़ को चालीस दिन तक खिलावे। मुफ़ीद है। अगर गरमी करे तो दूध इस्तेमाल करे। ख़फ़्क़ान वाले को लौकी कभी नहीं देना चाहिये। मिर्च, तेल, खटाई, वगैराः से परहेज़ रखे।

***ख़फ़्क़ान या मालीख़ूलियाः** एक बीमारी जिस में दिल की धडक़न बढ़ जाती है। Palpitation, hysteria.

28-7-45

S.V.: You must abide by the rules of the Mission strictly. The new comers must fill the form.

29-7-45

S.V. : Your position as a President is nominal. I am working in your present form. The same system will go on for every President following you. The post is a very important one and not open to everybody. I assure you but one thing and your Guru said the same somewhere, that your mistakes will count much and cannot be excused easily. The more the position one enjoys, the most burdened he is. **Be alert to do your duty calmly**. Consultation you can do among yourselves but you must not abide by it unless you consult me in the Mission's work specially, and other things in general. In the work of the Mission, I am the authority. The rest depends upon your Master who has given me this authority. Everything is in the general control of your Master here, and above, no doubt but He has distributed some of His work to the different sages making himself free for you. Going back.

4-8-45

हज़रत क़िब्लाः अज़ीज़ **रामचन्द्र** ने जो इस वक़्त काम किया है वो Blood Dogs (Blood hounds)की थ्योरी है। यानी ज़र्रात रूहानी, जिस्म के अन्दर इस क़दर तेज़ कर दिये जावें कि वो foreign matter को जो उस के बाधक है, खा जावे, या दूसरे मायनों में उस चीज़ पर असर डालें जो रूहानियत के ख़िलाफ़ है। और उस को मुनव्वर करते रहें। यह बहुत अच्छा तरीक़ा है और रूहानी सम्बन्ध में बिल्कुल है। हर मक़ाम पर फ़रदन्-फ़रदन् इस से काम लिया जा सकता है। जिस का नतीजा यह होगा कि उस चक्र को संभालने के लिये या दुरस्ती के लिये बहुत मुफ़ीद होगा। बिल्कुल automatic है। **तरीक़ा** यह है कि अपनी क़ुव्वते इरादी या अत्मिक शक्ति और बल से अपने ख़याल के ज़र्रात इस तरीक़े से डाल दे कि उन में ख़राबी absorb (जज़्ब) करने की ताक़त पैदा हो जावे या उस को निगल सकें। ज़र्रात में इस क़दर ताक़त होना चाहिये। बेहतर तो यह है कि High potency के ज़र्रात दाख़िल किये जावें ताकि वो ख़राब असर लेकर ख़ुद ख़राब न हो जायें। यह और भी अच्छा होगा कि या तो उन ज़र्रात में वक़्तन् फ़वक़्तन् ताक़त दी जावे या उन को इतना तेज़ शुरू ही में कर दिया जावे कि ताक़त देने की ज़रूरत न रहे। मगर मैं वक़्तन् फ़वक़्तन् ताक़त देने का तरीक़ा अच्छा समझता हूँ।

S.V.: Free minded as you are, you must have scope to work on. What is required for you is to free yourself from

all the things putting you aloof from this work. I again say the time will never come again, so you should devote yourself thoroughly to solve the intricacies of Nature. This is the special work for you. Prefer some hill station and remain there for a certain length of time. You will be alone there with your pen and pad. You will improve bodily there.

6-8-45

S.V.: The atrocities, so far committed by the people of the world, are on account of you. You have, really speaking, no time for any other work. You do not know, perhaps, that your responsibility is not confined only to this world. I tell you my experience of life that I never cared for my next meal and I assure you that I never remained hungry. You have got children, wife and others who depend solely upon you, but do you imagine that their cases will not be taken by us in case you devote yourself thoroughly to your Master's work. How lucky you are that your children realize you as the best man. This is the special favour of your Guru. Education will never fail in your family. Your making is an extraordinary one, so you have special kind of responsibility. We are all looking to you for the work and **the world is waiting for strong change to be done by you and you alone**. You can distribute your work among the powers of Nature.

15-8-45

हज़रत क़िब्ला: आज अज़ीज़ राम चन्द्र ग़ल्ताँ व पेचाँ था कि कोई ऐसा तरीक़ा ईजाद हो जाता कि **माया** से निजात रोज़े-अव्वल ही से मिल जाती। जहाँ तक उस की रसाई थी, खूब पैरा। अख़िरकार ईश्वर ने उस की मदद की और मसला हल हो गया। आज तक यह मस्ला हल नहीं हुवा। यह ईजाद इसी के नाम नामी से रहेगी। मुख़्तलिफ़ क़िस्म के मराक़बे और ध्यान मुख़्तलिफ़ मक़ामात पर ज़माने के बुज़ुर्गों ने बताये हैं। मगर इस तरफ़ किसी का ख़याल नहीं पहुँचा कि जिस चीज़ की लोग बेक़द्री करते हैं और उन की निगाह नहीं जाती। उसी में सब कुछ है। **तरीक़ा** यह है कि दहने (दाहिने) पैर के अंगूठे पर निगाह जमा कर मराक़बा करे और उस में कोई point मुक़र्रर कर ले। ईश्वर सर्वज्ञ है और हर तरफ़ फैला हुवा है और यह ही हालत उस की हमेशा रहेगी। प्रलय के वक़्त भी वो मुहीत कुल रहेगा और इस वक़्त भी है। जब कायनात के ज़हूर का वक़्त आया और उबाल पैदा हुवा, सूरतें ज़हूर पज़ीर हो गईं। इन्सान में जिस तरीक़े से वो सरायत किये हुये है, एक अज़ीब सूरत है जिस का समझ में आना मुश्किल है। समझने के लिये **यह तसव्वुर कर लिया जावे कि दिमाग़ असल ज़ात है जहाँ से उस की रोशनी व ताक़त कुल जिस्म में फ़ोकस डाल रही है**। वाक़ई तौर पर उस का सिरा और आख़िर समझ में नहीं आता, क्यों कि वो लामहदूद है। मगर समझने के लिये; और जिस अजीब तरीक़े में वो इन्सान में रौनक़ अफ़रोज़ है। यह मानना पड़ेगा कि **उस का आख़री हिस्सा**

पैर का सिरा है और जो इस में बात है वो यह कि यह और वो चीज़ दोनों एक हैं। और इस में किसी क़िस्म की मिलोनी नहीं । पस इस पर यकसू होने से यह मतलब होता है कि वो अपने starting point पर यकसू हो रहा है। और इस अमल के करने से नतीजा मत्लूब जिस के लिये यह मसला हूवा है, पैदा हो सकता है। **मैं हिदायत करता हूँ कि जो लोग अपने पैर पर न्यौछावर हो चुके हैं इस को ज़रूर करें।** यह एक ऐसी बात है कि लोगों को समझने पर या नतीजा मत्लूब पैदा होने पर हैरत हो सकती है। मगर मजलिसे-आम्मा इस की क़दर नहीं करेगी। इस लिये कि उन की इतनी समझ ही नहीं। उन्होंने जो कुछ कि क़वायद सीखे या पढ़े हैं, उन सब के बाहर है। मदन मोहन लाल! इस मसले की कोई क़ीमत नहीं हो सकती। सच पूछो तो हक़ीकत इस ने सामने रख दी। बाबू मदन मोहन लाल वकील बदायूनी को हिदायत कर दी जावे कि आज से इसी पर यकसू हों। और हालत लिखें। पूजा की restriction जो तीन माह के लिये थी, हटाता हूँ। इस की नक़ल हू-ब-हू और बजिन्सा भेज दी जावे। जब इस को शुरु करे तो अपने पीर से पूछ ले, इस लिये कि हर बात वो बेहतर समझता है।

17-8-45

हज़रत क़िब्ला: मेरा मतलब् यह है कि मिशन रजिस्टरी हो चुका। अब इस का काम शुरु होना चाहिये और उस में काम करने के लिये ऐसे लोग छांट लेना चाहियें जो नौ उम्र हों और ठीक काम कर सकें। रुहानी संस्था में उम्र का लिहाज़ नहीं होना चाहिये बल्कि

जो काम जैसा कर सके, उस से बेग़िल व ग़िश, वैसा ही लेना चाहिये। इस की तक़सीम तुम आपस में कर लो और क़ायदे की पाबन्दी सब लोग करो मगर हर मामले में एक दूसरे के मददगार बने रहो। जिस किसी का काम गिरता हुवा देखो, उस की जानिब मे शुरु कर दो। जिस के पास वक़्त ज़्यादा हो, वो ज़्यादा काम करे और आपस में प्रेम भाव रखे। बड़ाई छोटाई का सवाल नहीं। यह बात मुझ से सीखो। मैं अपने यहाँ हुज्जत को रवा नहीं रखूंगा। और न ज़रा सी बातों पर दिल शिकनी चाहता हूँ। यह काम मेरा है लिहाज़ा इस को ऐसा ही समझ कर करो। अगर कोई dissension का point पड़ जाये तो मुझ से दरियाफ़्त करो। मेरा हुक्म final होगा।

S.V.: I am more strict on this point. I want that the Mission may run smoothly and calmly. Fiery spirit is not required at all. We are not preparing you for the front. I know the position of Ram Chandra, he has now indulgence in his nature and that thing he has inherited from his Guru. Organization can stand on the firm footing of calmness. Love makes everything smooth. The first thing you do to attract your brethren with your calm and simple habits. When you reach this point, teach them things on lovely basis. Give them rules to follow, teach them service of humanity, and increase the feelings of brotherhood. Do your duty with them as a brother, think them as one of your own. Develop in them the feelings of solemnity and sincerity. Teach them to be sincere with everybody. The best for

organization is to make yourself such and then start. On my question on Organization (as in original). Take the example of your respected Guru who never attempted anything unless he did it for himself. There is a great mistake found in general that the people get others to do what they cannot do. Such persons are always a failure in their lives.

I want the practical man with good heart and calm habits, to be appointed for Organization.

I am thoroughly against the theory, as I see the people pressing a certain thing to do, they are wanting. I advise you to weigh everybody in the spirit of love and sympathy, and whatever get others to do, do it yourself first. I have given you several warnings to do what you mean at heart. Never mind if world is against you; never mind if your brothers and sisters may leave you*. Work for the sake of work and be firm, what you do. When we are so many to give you advice. You need not fear at all. Success will dawn, and dawn, be sure, sooner or later. I will say again even the Sun may burst upon you and the sky may fall upon (you), even then do what you will. There are dictates of your Guru for you, for the work and I know you are not doing them; why

---

Foot Note: * We quote the famous poem of Swami Vivekanandji = "Let eyes grow dim and heart grow faint; And friendship fail and love betray, Let Fate its hundred horrors send, And clotted darkness block the way - All nature wear one angry frown, To crush you out - still know, my soul; You are Divine - March on and on. Nor right, nor left but to the goal!"

this sluggishness, because your Guru does not want to do it at this time. He is making you and preparing you for some other work.

Success attends those who deserve it. Philosophers after philosophers have come down to the world and not one of them went without (being) hit. Remember the days of Lord Krishna who was troubled at all steps. Why you have come, is the question? My notes are the answers. Follow rigidly your Lord. If you forget anything to do, consult it again when you begin it.

19-8-45

हज़रत क़िब्ला: सब को चिट्ठियाँ जारी कर दी जावें कि आइन्दा से हर साल **कृष्ण जी महाराज** का जन्म दिन (पहले रोज़) मनाया जावे। व्रत रखा जावे। सिर्फ़ एक वक़्त हलकी ग़िज़ा खाई जावे और कोशिश की जावे कि ख़यालात नेक रहें।

22-8-45

S.V.: You will keep on simply on milk diet only once in the evening on **Janam Ashtami** day. Your work will be to concentrate yourself towards the people keeping fast, throughout Northern and Southern India and abroad. You will continue this work for two days together. Silence must

be observed on that day. No talk should be allowed on that day except the talk about **Lord Krishna** and venerable sages of India. But don't go too much to it, I mean the point of concentration.

हज़रत क़िब्लाः स्वामी जी ने जो हिदायात की हैं, उन पर अमल किया जावे। बेहुदा बातें न की जावें। बच्चों का ख़याल रखा जावे।

S.V.: You will be with full power on that day, so avoid the company of children, whether your own or of anybody. But I will say that you should be left alone till evening when the time of Puja comes.

23-8-45

S.V.: You are dwelling in imagination to carry on the work of the Mission on same sound basis but I fear lest they should remain on paper what we are going to dictate. The persons of high rank in your society may follow first to set an example for others.

Duties for Satsanghis

1. Service to fellow beings of every kind at one's disposal.

2. Faithful to the Supreme Lord, Your Master; I mean the Mission as well.

3. Follow the laws of Nature and rising early.

4. Simple in habits and regular in diet.

5. Truthful in words, thought and deed.

6. Sympathy to others like that of one's children.

7. Be pious and generous.

8. Whole world to be thought as one community with rights to them.

9. Regular time to be spent in Puja twice a day.

10. Prarthana (Prayer) to be done by every member of the Mission at night before going to bed, for the success of the Mission with strength to follow the laws of Nature and the mandates of the Mission for himself. **This is the most important thing.**

Note: This is binding upon you all whether great or small. Special cases are exempted. They will abide by the orders, whichever may be.

Duties for a teacher

1. Teach them like your brothers.

2. Have sympathies with them and follow rigidly your Guru in this respect.

3. Talks should be humiliating (humble) as one is

speaking for himself. Words spoken should be like a flow of the river in calm waters. They are God's creatures as they should be respected and loved at heart. Useless talk should not be allowed while carrying on Satsangs.

हज़रत क़िब्ला : हर सतसंगी को एक नोट बुक बनाना चाहिये। जिस में यह उसूल लिख लिये जायें और उन को वक़्तन् फ़वक़्तन् देखता और अमल करता रहे और ख़ामियाँ दूर करता रहे। **नोट बुक** में इन्दराज होना चाहिये कि इन में कौन सी बात पूरी नहीं कर सका, और किस में कमी रही।

S.V.: Every month this note will come to you for perusal. One is at liberty while sending the notes to you to write one's spiritual condition. **Weaknesses should be written in it decidedly in every month.** Special references to be made to me or your Guru. If the malice in the Society is not removed, mind that your explanation will be called for. Responsibility goes upon your shoulders. By malice I mean the everything beyond. Laws of Nature govern everything in daily life.

25-8-45

हज़रत क़िब्ला: प्रलय (क़यामत) के बाद ख़ामोशी ही ख़ामोशी थी। जब ज़हूरे आलम का वक़्त आया, ज़ात में एक तरह का उबाल पैदा हुवा जिस से (हरकत) action शुरु हो गया। चुनाँचे इस वक़्त

की कैफ़ियत उसी उबाल की तरह थी जो ज़ात से निकल रहा था। और किसी के ख़याल का असर नहीं था। इस तरीक़े को अगर ज़्यादा कहा जाये तो अग़लब है कि दिमाग़ की नसें फठने लगें।

तरीक़ा यह है कि वो ही कैफ़ियत पैदा कर दे। इस तवज्जो की मुमानियत करता हूँ। यह मल्का मुझ में ज़िन्दगी के बाद पैदा हूवा। यह वो हालत है जो मैं अज़ीज़ राम चन्द्र को Transfer कर चुका हूँ। गुज़िश्ता नोट में इस के बाबत लिखा चुका हूँ। बाबू मदन मोहन लाल! इस तरक़्क़ी का कोई देखने वाला नहीं। अगर एक भी ऐसा पैदा हो जाता तो मुमकिन था कि मेरी क़ुदरत का अन्दाज़ा लग जाता। बाबू मदन मोहन लाल के सवाल का जवाब यह है कि अगर दूसरा शख़्स (मतलब बड़े पाये को बुज़ुर्ग से है) इस को करे तो महज़ अक्स आयेगा।

26.8.45

S.V. = The way should be clear of all things and light should grow dull and dull till it diminishes in the end. There should be no sun and no moon in the way. In one corner of the emblem there should be the Rising Sun glittering or shining on the base making horizon at one corner. The wave you made at the bottom of the emblem in sketch should be filled with Sri Ram Chandra Mission pointing Sahaj Marg. There should be an opening in the middle where you have written Shri R.C. Mission.

हज़रत क़िब्लाः चाहिये कि मेरी तरह चकसार हालत पैदा कर लें, फिर कोई भेद बाकी नहीं रहेगा। जितनी इस में कमी होगी, उतनी उसमें कमी होगी। यह ही असल फ़नाइयत है। इस के लिये बड़े अभ्यास की ज़रूरत है।

27.8.45

हज़रत क़िब्लाः ज़ात में लय होने का तरीक़ा सीधा और सहल है। और अच्छा discover हो गया है। एक तो तरीक़ा अपने पीर में लय होने का है। और दूसरे बराहे रास्त ज़ात से सम्बन्ध और लय होने का है। **तरीक़ा** ज़ात में लय होने का यह है कि अपने आप को ख़याल से इतनी वुसअत दे कि सब तरफ़ अपना फैलाव का एहसास बल्कि यक़ीन होने लगे कि अपना फैलाव कुल युगों और वायू मण्डल में एहसास होने लगे। इस मश्क़ को इतना बढ़ाये कि अपना फैलाव और इस की वुसअत एक ही एहसास होने लगे। हत्ताकि अपने आप को उस में गुम होने का एहसास शुरु हो जाये और रफ़्ता-रफ़्ता यह ख़याल भी जाता रहे। मेरी राय यह है कि पीर में फ़ना होने की कोशिश करे ताकि जो कुछ कि कहा है, उसी को निभा ले जा सके। ज़ात में फ़नाइयत बहुत अच्छी है, अगर हो सके। मगर इस वक़्त तक इस की मिसाल सिर्फ़ **कबीर** ही हुये। यह माद्दा उन में ख़ुदादाद था और रोज़े अव्वल से मौजूद था जिस की फ़ुरना

अज़ख़ुद हुई। हमारे **क़िब्ला मौलाना साहब** ने फ़नाइयत कुलियतन् पीर में होने के बाद इस को शुरु किया था। यह अमल highest stage पर जा कर ख़ुद ब ख़ुद हो जाता है।

29-8-45

S.V.: You have been kept on fast for two days - we have made today a field for the power to rush in. It is the special gift of **Lord Krishna** being given to you on His Birthday.

30-8-45

S.V.: The power has been transferred this afternoon (1.15PM) in three lots. Again the rush of power from **Lord Krishna**.

नोटः हज़रत क़िब्ला ने दरमियान में थोड़ा-थोड़ा वक़्फ़ा दे दे कर मजमूई तौर पर क़रीबन् छह घन्टे तक तवज्जो दी।

S.V.: You have no power to bear. Stop. (Meditation)

हज़रत क़िब्लाः अस्नाए मराक़बा क़रीब दस बजे रात के हज़रत क़िब्ला ने फ़रमाया कि जिस ने मेरा आसरा लिया, उस को मैं ने भरपूर कर दिया।

31-8-45

S.V.: The room is so much hypnotised that the people of ordinary standard should not be allowed to meditate alone. The power is gushing up from the walls.

6th September, 1945

हज़रत क़िब्लाः एक बड़े तजुर्बे की बात तुम को बताता हूँ कि दोसती का निभाव उस जगह हो सकता है जहाँ एक दूसरे के दिल में क़द्र हो। मेरा वतीरा यह ही रहा है।

रुहानियात के लिये ज़हर क्या है?

जवाब : "ग़ुस्सा।"

एत्दाल कभी नहीं आ सकता जब तक इस वबा से नज़ात न हासिल की जावे। और अपने आप को इस से ख़ाली न कर लिया जाये।

इस से असर क्या पहुँचता है?

System में भारीपन आ जाता है और दबाव पैदा हो जाता है। जिस की वजह से आज़ाद और लतीफ़ धार सरायत नहीं कर पाती।

ख़याल पर से वज़न (बोझ) नहीं हट पाता। सवाल यह पैदा होता है कि इस से नजात कैसे मिले? **नुस्ख़ा** यह है कि अपने आप को निहायत आधीन और आजिज़ समझ ले (बल्कि यक़ीन कर ले) और मश्क़ करता रहे। यहाँ तक कि यह ही रंग उज़ू-उज़ू में पैवस्त हो जाये। हर जगह इसी की बुराई की गई है, यानी ग़ुस्से के क़ाबू करने की। क्या यह क़िस्सा क़ाबिले मिसाल नहीं है कि श्री **कृष्णजी महाराज** के यहाँ दुर्बासा ऋषि मेहमान रहे और खुश वापस गये। क्या कोई हस्ती इस वक़्त तक श्री **कृष्ण जी** महाराज के मुक़ाबिले की हुई। हर जगह ठन्डे दिल ही की तारीफ़ है और रूहानियत के लिये ऐसे ही दिल की ज़रूरत है। यह (दिल) इस क़दर नरम और हल्की चीज़ है कि ज़रा सी हवा की गरदिश होने पर कुम्हलाने लगता है।

27-9-45

आज इस वक़्त हुकमन् पंडित **बाबू राम** का connection काट दिया गया।

हज़रत क़िब्ला: इन्स्पेक्टर साहब जिस वक़्त फ़तेहगढ़ से तशरीफ़ लावें तो bet कर दो कि अगर रूहानी ताक़त का करिश्मा देखना चाहो तो तैयार हो जाओ। कोई standard क़ायम कर लो सिवाये direct connection के। और उन्हें दिखा दो कि ऐसा होता है कि नहीं। यह रूहानी ताक़त है और वो (चाटक नाटक) will का करिश्मा है। इन दोनों में बड़ा फ़र्क़ है। रूहानियत के

मक़ाम पर चड़क़ भड़क, तेज़ी तुर्की जाती रहती है। **माया** का अभाव हो जाता है। कोई दूसरी चीज़ उस की झोंक को रोकने के लिये हायल नहीं होती। इस से नीचे की बात will है। और इस के करिश्मे दिखाये जा सकते हैं और उस से (रूहानियत से) करिश्मा दिखाने वाला आज तक पैदा ही नहीं हुवा। **कानपुर** का मामला मेरे ज़ेरे नज़र है। मेरा और अज़ीज़ **राम चन्द्र** का, दोनों का रूहानी मक़ाम है। फ़र्क़ इतना है कि मुझ में ग़ैर महदूदियत है।

मैं ने **रामेशर** को इस लिये बुलवाया था कि कुछ तवज्जो दे दूँ और काम सुपुर्द कर दूँ। कल destruction का ज़िक्र था। इस का होना लाज़मी है और बदीही है। उन को इस तरीक़े से target बनाया जाये कि कोई नाम लेवा और पानी देवा न रहे। (**जग्गू** की माँ, बीवी और बच्चे मुस्तस्ना हैं) इस मामले में इस वजह से देर हुई कि लोगों ने मेरा काम अपना नहीं समझा। कुछ लोग प्रार्थना का काम ले लें और कुछ और काम करें। प्रार्थना जिन के लिये मैं चाहूँगा, उन के सुपुर्द कर दूँगा। रामेश्वर 9 अक्टूबर सन् 45 ई० के बाद शुरु करें, तब तक प्रार्थना करें।

S.V.: They can't remain.

3-10-45

S.V.: I allow **B. Ram Chandra Saksena** (III) to give तवज्जो to any of my missionaries including the President. He

can plainly say that he belongs to the Mission of my Guru **(Swami Ram Krishna ji Param Hansa)**, under **Sahaj Marg** to which I (S.V.) am included and his Guru too, making the claim alike. He need not hesitate in saying that he was and is initiated on the hand of Swami **Vivekanand ji** through Mahatma **Ram Chandra** (II), his Guru who enjoys the full authority on behalf of me and his Guru as well. He **(S.V.)** is merged in him (Mahatma **Ram Chandra ji** (II)). Tell him to move there.

Directions for him

When he sits for the purpose he should think himself in the capacity of his Guru. If any opportunity presents itself, he can call me immediately. He should think himself always a member and organiser as well of the Mission which he already belongs to. He will be given more responsible duty of this Mission.

16-10-45

S.V.: All of you should know that He (RC) is no more in this world. Hurry up. the time is passing on. Show this to all who have faith in (RC) you.

श्री कृष्ण जी महाराजः सच तो यह है कि ज़माने ने ऐसा शख़्स नहीं देखा। तुम्हारे गुरु के बारे में क्या कहूँ। तुम से नतीजा निकाल ले। उन को (हज़रत क़िब्ला) आज तक किसी ने नहीं पहचाना। धोके में रहे।

S.V.: My solemn prayer from **Lord Krishna** will be to leave him (RC) for some time in this world.I mean the number of years required for him to finish the work.

18-X-45

S.V.: No doubt you will change the face of the world. The condition of MAN (मन) has gone from bad to worse. How it happened - the habit you cultivated in the run of your life. To make it alright, you will have to go back. The point you have discovered is a valuable gem of spiritual philosophy. It is but in infancy. It requires development for character building. Make use of it.

हज़रत क़िब्लाः जिस वक़्त यह (सज्जादा नशीन) **लखीमपुर** जा रहा था। ख़याल आया कि वो कौन सी बात है जो मन में जागुज़ीं हो कर नतायज ख़िलाफ़ पैदा कर रही है। और वो कैसे सुधर सकती है। फ़ौरन ख़याल आया कि जिस तरह से इस ख़याल ने तरक़्क़ी की है उस को वैसे ही वापस लौटा लेने की कोशिश करो। चुनाँचे उस के ख़याल में बहुत सीधा सादा मगर मुफ़ीद नुस्ख़ा

S.V.: My solemn prayer from **Lord Krishna** will be to leave him (RC) for some time in this world.I mean the number of years required for him to finish the work.

18-X-45

S.V.: No doubt you will change the face of the world. The condition of MAN (मन) has gone from bad to worse. How it happened - the habit you cultivated in the run of your life. To make it alright, you will have to go back. The point you have discovered is a valuable gem of spiritual philosophy. It is but in infancy. It requires development foı character building. Make use of it.

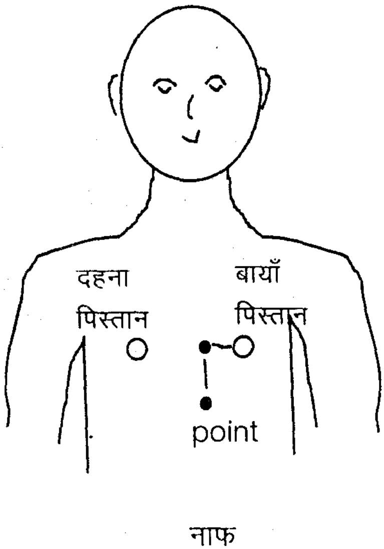

हज़रत क़िब्ला: जिस वक़्त यह (सज्जादा नशीन) **लखीमपुर** जा रहा था। ख़याल आया कि वो कौन सी बात है जो मन में जागुज़ीं हो कर नतायज ख़िलाफ़ पैदा कर रही है। और वो कैसे सुधर सकती है। फ़ौरन ख़याल आया कि जिस तरह से इस ख़याल ने तरक़्क़ी की है उस को वैसे ही वापस लौटा लेने की कोशिश करो। चुनाँचे उस के ख़याल में बहुत सीधा सादा मगर मुफ़ीद नुस्ख़ा आ गया। वो यह है कि हर फ़र्दो बशर को लाज़िम है कि कम अज़ कम यह मराक़बा ज़रूर करे। पन्द्रह मिनट तक किया जा सकता है। रायज कर दो।

तरीक़ा: बांए सीने पर जो निशान है(यानी बायाँ पिस्तान), उस से दाहिनी तरफ़ दो उंगल सीध में नापे और जहाँ पर दूसरी उंगली का सिरा है (यानी जहाँ पर दोनों उंगल की लम्बाई ख़त्म होती है)

उस की सीध में तीन उंगल नीचे सीधी लाइन जहाँ पर तीनों उंगल की लम्बाई ख़त्म होती है। वहाँ पर एक point यानी नुक़्ता समझ ले और उस point या नुक़्ता पर मराक़बा करे कि जुम्ला स्त्रियाँ उस की (मराक़बा करने वाला अपनी) बहनें (sisters) हैं। मुत्वातिर जितनी देर मराक़बा करे यह ही ख़याल बांधे रहें। और समझ ले कि वाक़्या यह ही है।

यह बहुत छोटा सा मराक़बा (ध्यान) है मगर इस क़दर ज़ूद असर है कि अगर तबीयत से किया जावे तो चन्द ही दिनों में, नहीं, बल्कि इस के करने के बाद ही असर शुरु हो जायेगा। और इतना

19-X-45

हज़रत क़िब्ला: इस दुनिया में चन्द बातें हर शख़्स के लिये लाज़मी हैं। इन्सान, इन्सान नहीं कहा जा सकता जब तक उन क़वायद की पाबन्दी न करे जो उस के लिये लाज़मी हैं। अगर कोई मुझ से यह कहे कि तुम देवता बनना चाहते हो या इन्सान, तो मैं यह ही कहूँगा कि इन्सान बनना चाहता हूँ। देवताओं की हालत घड़ी की चाबी की तरह से है जब तक उन में कूक रहेगी, काम करते रहेंगे। जहाँ ख़त्म हुई, अपनी हैसियत खो बैठे। यह कूक अरसे से नहीं लगाई गई है। इस लिये उन के काम ढीले पड़ रहे हैं। और नतीजा मत्लूब पैदा करने में वो क़ासिर हो रहे हैं। हवन बेसूद हो रहे हैं। फ़सलें ख़राब हो रही हैं। ग़र्ज़ेकि बहुत सी ऐसी बातें हैं। कहाँ तक लिखाई जावें। इन्सानी कूक जो रोज़े अज़ल से भर दे गई है, अब तक ख़त्म नहीं हुई और न इस के ख़त्म होने की उम्मीद है। यह बात आख़िर तक ऐसी ही रहेगी। यह काम अज़ल का है और अबद तक रहेगा। अब सवाल यह पैदा होता है कि हम अपना हक़ किस तरीक़े से आवर करें और इस कूक को किस तरह regulate करें ताकि घड़ी सही वक़्त देने लगे। इस के लिये बुज़ुर्गों के वो पूरे नुस्ख़े हैं जिन के इस्तेमाल से इन्सानी standard क़ायम रह सकता है। रोज़ाना के बरताव, ख़ुश अख़लाक़ी, एत्दाल पसन्दी, मयना रवी, इस की जान है। अब इन बातों को किस तरीक़े से क़ायदे में लाया जावे। इस के लिये उसूल ज़ाहिरी बेहतर रहेंगे। मसलन् अलेहस्सुबह उठना। जिस्म की सफ़ाई करना, वक़्त पर खाना, वक़्त पर उठना बैठना मुफ़ीद रहेगा। यह इब्तिदाई बात है।

पहले इन बातों की पाबन्दी कर ले, इस के बाद आगे क़दम रखे। नौजवानों में यह आदतें इस ज़माने में अक्सर पाई जाती हैं कि इस की पाबन्दी नहीं करते। और यह सख़्त ऐब है। इस के बाद घर के काम काज में चन्द उसूलों के साथ मसरूफ़ रहना चाहिये। रोज़ी कमाने की कोशिश करना चाहिये। इस तरह पर कि दूसरों का भी भला कर सके मगर इस में ग़ल्ताँ-पेचाँ नहीं होना चाहिये। ईशर की याद हर काम के साथ रहना चाहिये। बरतावा इस तरीक़े का होना चाहिये कि यकसानियत झलक पड़े, इस का मतलब यह है कि हर शख़्स को यह ख़याल रहे कि फ़लाँ शख़्स अपनी ड्युटि में जो उस के ज़िम्मे है, क़ासिर नहीं है। प्रेम भाव बात-बात में टपके। एक दूसरे की ख़िदमत करना अपना फ़र्ज़ समझे। जो जिस लायक़ है उस के साथ वैसा अपना हक़ अदा करे। बुराई का ख़याल दिल से काफ़ूर होना चाहिये। सब को मख़लूक़े ख़ुदा में से समझे और सब का मालिक उसी को समझे और उस की वैसी ही इज़्ज़त करे। और यह बिला कमोकास्त सब के साथ होना चाहिये। ख़्वाह सत संगी हो ख़्वाह ग़ैर सत संगी। यह उसूल आम तौर पर सब के साथ बरतना चाहिये।

S.V.: (10.00 PM) If any lady comes forward vowing to take up the Mission's work throughout her lifetime and wants to move in that (sphere) only; if she has no children and no husband, then as a special case she may be allowed to work in the field and she will be considered as member of the Mission in its true sense.

The rest will be considered the members. Filling of forms will not be proper for ladies because the people object to it. I do not want that the ladies may sit shoulder to shoulder with the gents while carrying on **Satsang**.

There must be separate rooms for them behind the curtain. There are examples where such things were allowed to creep in, corruption followed. Follow your Guru in this respect. If any zealous worker among the ladies comes forward and says to work in the open field, believe her not till the dark shadow from her heart is unveiled. You will be the better judge for it. Among the European ladies, the case is different. They are more liberal than those in India. If some such thing occurs in your lifetime, consult me.

The whole of my writing is for the platform, no bar is put to help in the work of the Mission. This will be impressed that they (ladies) are the members of the Mission and have the same source. They can be initiated but not very often.

24-X-45

हज़रत क़िब्लाः मूर्ति पूजा का आग़ाज़ कैसे हुवा और यह क्यों रायज हुवा। यह दो सवाल अकसर लोगों को परेशान करते रहते हैं। कोई मुवाफ़िक़ हो जाता है और कोई ख़िलाफ़। असलियत से दोनों बेबहरा हैं। इस की दरमियानी हालत किसी के एहसास में नहीं आई।

किसी ने पत्थर उठा लिया, किसी ने और चीज़ परस्तिश के लिये बना ली। तरह-तरह की चीज़ें परस्तिशगाहे-आम्मा हो गईं। कोई किताबों पर फूल चढ़ाने लगा, कोई कुछ करने लगा। दरिया और परनाले भी पूजे जाने लगे। क़मचियाँ पूजी जाने लगीं। हर धात को सिर नवाने या सिज्दा करने लगे। ग़रज़ेकि बेशुमार पूजायें इस के मुताल्लिक़ ईजाद हो गईं। जिस का नतीजा यह हुवा कि कसरत पसन्दी आ गई। वहदत छुपने लगी और परदे दर परदे उस में पड़ते गये। इससे यह बेहतर था कि किसी एक चीज़ को दिल दिया जाता और परस्तिश के लिये मुक़र्रर की जाती। और सुनो, जिस मूर्ति को सामने रखा, वो ऐसी ख़ुदा की गई कि जब ज़रूरत हुई उसी पर निगाह पहुंची। यह नहीं हुवा कि उसी का (ईश्वर का) जल्वा उस में तसव्वुर किया जाता और फिर निगाह उस पर की जाती। मुराद तो लोग ईशर से मांगते हैं मगर उन का ख़याल उसी में अहाता करने लगता है। इस से अगर ज़रा ऊँचे उठ जायें और बराबर उठते रहें तो यह हो सकता है कि उस से आगे बढ़ने की ख़ुशख़बरी मिलती रहे। मगर यहाँ तो यह है कि उसी को छोड़ना भी नहीं चाहते। एक वक़्त था जब इस को कोई जानता भी न था। उस के बाद यह हुवा कि ख़याल चक्कर खाने लगे और देवताओं की तरफ़ पहुँचने लगे। जिद्दत तबाअ ने ऐसा ज़ोर मारा कि उन की मूर्तियाँ क़ायम कर दी गईं मगर यह परस्तिश की नियत से न थीं। इस के बाद रफ़्ता-रफ़्ता यह हुवा कि उन की क़द्र दिल में घूमने लगी और उस को उस बुत से निस्बत देने लगे। बनाने वाले की कारीगरी ने और भी दिल को उस तरफ़ खींच लिया। ज़माने के लिहाज़ से कसाफ़त बढ़ रही थी। उसी की निस्बतन् (यानी कसीफ़ चीज़)चीज़ पसन्द आने लगी और उस पर यारों

ने और जिला दे दी। बस फिर क्या था। रुझान और मैलाने तबाअ उस पर मब्ज़ूल होने लगी और इतनी दिलचस्पी पैदा हुई कि उस का तार ऊपर से नहीं रहा। गोया तहत में देखना शुरू हो गया। इस से नुक़्सान भी है और फ़ायदा भी। फिर कहना पड़ता है कि इस से फ़ायदा वो ही उठा सकता है जिस की लगन ईशर से हो और उस पर निगाह ठहरने का ज़रिया मान ले। यह भी नहीं कि तमाम उम्र उस को ऐसा ही समझा करे बल्कि उस वक़्त का इन्तज़ार करे और इन्तज़ार में रहे जब तक कि यह चीज़ ख़ुद ब ख़ुद छूटने लगे। और यह हो कैसे? उस वक़्त जब कि इस को एक आला सिर्फ़ मान लिया जावे। यह उस शख़्स के लिये मुफ़ीद है जो मूढ़ हैं और इस से आगे ठोस भाव जब तक कि न लेवें, बढ़ नही सकते। अस्ल में इस के लिये भी उस्ताद की ज़रूरत है जिस में कम अज़ कम इतनी ताक़त आ गई हो कि एक मूढ़ को इस में रखते हुये आगे बढ़ाये। यह मज़मून मैं ने इशारतन् लिखाया है। वाक़यात जितने पेश आवें और जितने ढंग प्रतीत हों, निभाते हुये जिज्ञासू को आगे निकालना चाहिये, और तरक़्क़ी देना चाहिये। मैं ने अपनी ज़िन्दगी में किसी वक़्त कहा था कि महात्मा जब भ्रमण करते थे और किसी मक़ाम की सुनसान हालत जब उन की निगाह में आती थी तो उन की निगाह उस पर झुक जाती थी।

S.V.: This method was followed in the medieval age of the era.

हज़रत क़िब्ला: और यह बात ज़्यादातर मन्दिरों में होती थी जहां कि लोग ज़्यादा आते जाते रहते थे और वो मूर्ति को Hypnotize कर

दिया करते थे। इस वजह से कि मूढ़ लोगों पर भी सामने बैठने से असर पड़े। यह दूसरी क़िस्म की **प्राण प्रतिष्ठा** है जो महात्माओं की ईजाद है। जब यह प्रणाली रायज होने लगी तब वो ऐसा करने लगे।

S.V. : In fact the thing described or written by **Tulsidas,** no more exists. I did not want to write.

26-X-45

हज़रत क़िब्लाः मैं इस ख़याल को पसन्द करता हूँ कि तीन माह के लिये काम छोड़ दो और आज़ाद रहो। तारीख़ मैं मुक़र्रर कर दूँगा। इस दौरान में स्वाध्याय और मुझ से ताल्लुक़ रहेगा। मुरीदैन को ग़ायबाना मदद् दे सकते हो। मुझे जब किसी शख़्स की ज़रूरत पड़ेगी, बुला लिया करूँगा। इस दौरान में उन को (RC) क़तई आराम दिया जाये। कोई बात उन के सामने पेश न की जाये, बल्कि तन्हाई का मौक़ा दिया जाये। मिलना जुलना तर्क रखा जावे। लोगों से कह दिया जावे कि दिल व दिमाग़ के आराम के लिये मोहलत दी गई है। कम सुख़्नी इन का वतीरा रहेगा। मिशन के झगड़ों से बचाया जावे। जो बातें कि ज़रूरी हैं पहले ही से तैयार कर के रख ली जावें ताकि इन के दिल व दिमाग़ पर किसी तरह का ज़ोर न पड़े। मेरा फ़ैज़ 9 बजे रात के जारी रहेगा ताकि लोगों को फ़ायदा पहुँचता रहे। इन की याद में मेरी तवज्जो होगी। फिर भी जिस को यह बुलायें, आ सकता है, मगर इतनी ही देर के लिये जितना यह चाहें। मैं समझता हूँ कि अगर इस

time पर लोग अपने यहाँ बैठ लें तो उन को वो ही फ़ैज़ की फुरना मिलेगी जो यहाँ आने से होती है। मेरा फ़ैज़ आम होगा।

29-X-45

हज़रत क़िब्लाः इस के (RC) दिमाग़ में कुल solution इस तालीम का आ चुका है। तालीम मुकम्मिल है मगर ख़दृशा इस बात का है कि हर शख़्स में अवतार की पूरी-पूरी हालत न उतर जाये। इसलिये मैं मुनासिब समझता हूँ कि इस को सीने ही में रखा जाये और इस को ऐसे ही लेते चले जायें। तालीम एक हद तक दी जा सकती है मगर सब को नहीं। यह हुक्म **श्री कृष्ण जी महाराज** का है।

श्री कृष्ण जी महाराजः तुम्हारे यह सब मक़ामात खुले हुये हैं। इसी पर सब को क़ायम कर देना क़ुदरत के ख़िलाफ़ होगा। यह ताक़त ख़ास है जो ख़ास ही में रखी जाती है। मेरी मिसाल मौजूद है कि मैं ख़ास चीज़ जिसमें था, अपने साथ ही ले गया।

हज़रत क़िब्लाः जितने बुज़ुर्ग हैं सब ने अपना काम तुम्हारे सुपुर्द कर दिया है और ख़ुद दस्त बरदार हो चुके हैं। हर सिलसिले की तुम को इजाज़त है, जिस में चाहो तालीम करो। वो ही निस्बत पैदा होगी।

6-XI-45

आपस में बात चीत हो रही थी। **रामेशर प्रसाद** ने कहा कि अगर मुझ में जज़्ब ख़ूब तेज़ हो जावे तो मैं ख़ूब काम करूँ। इस पर

इरशाद हुवाः-

हज़रत क़िब्लाः आग़ाज़ इस सिलसिला (सहज मार्ग) का अज़ीज़ **रामचन्द्र** से हुवा है। इस में हिन्दुवापन है। जहाँ हमेशा असल की नक़ल रही। ज़रूरत के वक़्त उसी की special power से काम लिया जाता था। इस के बारे में मैं कह भी चुका हूँ। जज़्बाती कैफ़ियत जिस को उभार की सूरत कहते हैं, मुसलमानी ज़माने से शुरु हुई। यह भी एक तरीक़ा था जो उस वक़्त की मसलेहत थी। अगर ग़ौर किया जाये तो यह कैफ़ियत अज़ीज़ **रामचन्द्र** से क़तई ख़िंच गई। इस लिये कि मौजूदा सिलसिला नश्वोनुमा पाये। यह ही बात आगे बढ़ती जायेगी। जिस को जज़्ब कहा जाता है, वो यह नहीं है जैसा कि रामेशर का ख़याल है। ज़ज़्बे के अस्ल मानी चिपकाओ के हैं। वो उभार था जिस में माद्दियत शामिल थी। यह ख़ुलूस है और इस की रफ़्तार कई गुना ज़्यादा है। यह चीज़ तमाम उम्र जा नहीं सकती और उस के लिये हर वक़्त पंखा झलने की और तेज़ी बढ़ाने की ज़रूरत पड़ती है। पर लाज़मी नहीं कि उसी से काम बन सके। उस से कई गुना ज़्यादा इस से बन सकता है। इस से (के) डसे हुये का मन्त्र नहीं। यह ही चीज़ क़ायम रहेगी। उन लोगों को भी जो उभार पैदा करते थे, इसी पर आना पड़ता था। मगर यह बात आख़िर में होती थी। काम इसी हालत से बनता है। (नोटः **रामेशर प्रशाद** से मरक़बा कराया गया।) यह ही तेज़ी है जो रामेशर को दिखलाई गई। यह बढ़ाई भी जा सकती है। मैं चैलेंज करता हूँ कि अगर इस क़िस्म की यानी मौजूदा सूरत की, जिस में यह बात पूरी उतर चुकी हो, एक तवज्जो भी देदी जाये, तो तमाम उम्र उसका असर जा नहीं सकता। यह ज़रूर है कि अगर वो यानी

अभ्यासी बहाना चाहे तो हो सकता है। यह वो चीज़ है कि आहिस्ता-आहिस्ता सुलग-सुलग कर कुल भट्टी गरम कर देती है। इस का असर आगे देखने में आयेगा। अभी जुम्मा-जुम्मा आठ दिन हुये हैं। यह हक़ीक़त है। मैं ने दोनों बातें मिली जुली रखी थीं, यानी सुरूर भी शमिल कर लिया था। मगर अब बिल्कुल ख़ुलूस है।

7-XI-45

हज़रत क़िब्ला: मैं अब आत (उकता) गया हूँ।

8-XI-45

हज़रत क़िब्ला: इन सब लोगों ने मुझ को परेशान कर रखा है।

S.V.: Whoever comes to you, give him training. You need not bother yourself further. I advise all of you to avail of times - sooner the better. We want hands to shoulder your responsibility. I want to depute one for each corner. Improve a little in your health so that we may be able to sit in the open field. The people are waiting for you. We are checking them at present and want them to come singlehanded, not like swarms of locusts. Your Guru always sees the capacity of your tender health.

हज़रत क़िब्ला: मेरा यह हर वक़्त ख़याल रहता है कि ऐसा न

हो कि इस के दिमाग़ पर ज़ोर पड़ जाये, क्यों कि अभी क़ुदरत को काम लेना है जिस के Hints आ चुके हैं।

S.V.: Be like a lion. Never mind if you tear a few.

13-XI-45

तरीक़ा हस्ब ज़ैल ईजाद करदा सज्जादा नशीन श्रीमान राम चन्द्र जी साहब जो बाद तस्दीक़ व तरमीम हज़रत क़िब्ला नोट किया गया।

तरीक़ा: जिस्म की अन्दरूनी और बेरूनी सफ़ाई रखे (यानी जिस्म नजासत से पाक और अन्दर फ़ासिद ख़यालात से), हर वक़्त तबीयत साफ़ रखे। और कोशिश इस बात की करे कि दिल पर बोझ (गिरानी, कबीद्गी) न आने पाये। और इस को अभ्यास करके बढ़ाया जावे। मतलब यह है कि अपनी हालत इतनी साफ़ करे और सादा रखे, जैसी नेचर की है।

बिल्फ़ाज़ दीगर यह है कि अपनी सादगी और रविश (रहन-सहन) बिल्कुल ऐसी होना चाहिये, मिसाल जैसे कि पानी की धार ऊपर से छोड़ी जावे तो जहाँ तक उस को साफ़ और सीधा रास्ता मिलेगा, निर्मल और सरल हालत में बहती रहेगी। यही उसूल है। ऐसी हालत पैदा कर लेने से जो बात कि वहाँ (धुर से) से शुरु हुई है, सीधी पहुँचेगी। गोया नेचर यानी क़ुदरत की नक़ल करना और इसी से निस्बत हासिल करना है।

14-XI-45 (In train)

हज़रत क़िब्लाः मैं कह सकता हूँ कि यह point मुझे ज़रूर मालूम था। इस से पहले इस की discovery नहीं हुई। यह क़ुदरत का कमाल है कि चीज़ दिल ही में मौजूद है। यह वो point है कि जहाँ पर लोग सुषुप्ति में जाते हैं। इस का इल्म हर शख़्स को नहीं होता। इस के अन्दर बहुत सी बातें हैं। यह अथाह है, **मक़ामे हैरत** इस को कहते हैं। बहुत से बुज़ुर्ग इस में ग़ोताज़न रहे। यह वो मक़ाम है जहाँ पर वह्य (वही) नाज़िल होती है। अच्छा अब फिर बताऊँगा। यह मक़ाम सिर्फ़ नबियों का खुला होता है। मैं दुआ देता हूँ कि जिस ने यह मक़ाम दरियाफ़्त किया है वो कोई बात spiritual science ऐसी नहीं रहेगी जो उस पर खुल न जाये।

S.V.: **Lord Krishna** is Himself taken by surprise to see the field of your sound brain. None knew this play in the point except **Lord Krishna** and your Guru after (thereafter). The sages of India have long been meditating over this point playing the part in the wider field of spiritualism, but could not discover. This is a vast circle, unlimited and endless. Nobody has measured it. Thousands have been wasted away and many have swam over the waves but none could go beneath. Its solution will go in your confidential note which is coming further. The secret of Nature will be revealed to every eye, and power will be revealed to every eye, and power will be utilized in a wrong way. The various powers of Nature are subordinate to the very

point. Godly works descend through it. How much we may define it, the matter remains incomplete. The power of God is located at this big centre.

15-XI-45 (at Agra)

S.V.: You are on the gateway of **Rajputana**. Begin your work. You will have to come again for the work when you will take jumping high state. This part is almost barren from spirituality.

17-XI-45 (at Sikar)

S.V.: The work of **Rajputana** was started in a good way, but since you are not staying here any more, the work is half done. Moreover, you are not feeling well today, otherwise a night's work was sufficient, there is still time and age. It was our wish that your disciple may be married here to create a new resource for him to work. He has got a good mate. I don't care for money and kind. You are perfectly alright in thinking that the downfall of the **pleader** now begins. He is not a good man and giving trouble to his mother-in-law which is touching us deeply. She has a pious soul in her. He (**pleader**) has not got eye to see the soul dominating her. That will not go unrevenged (unrevengeful). When you reach home, tell him to utilize her (wife) properly. Her senses to be used properly in the right

direction so that she may stand with him shoulder to shoulder in the work of Master, my Lord.

हज़रत क़िब्ला: मैं ने अज़ीज़ रामचन्द्र में अपनी दूई जिस का इस वक़्त तज़किरा था इस लिये क़ायम रखी है ताकि कुछ परदा ऐसा हायल रहे कि यह उस में मिल कर जिस्म न छोड़ दे। इस की शक्ल यूँ है जैसे कोई शख़्स किसी में चिपका हुवा हो मगर अपना आप उस को उस से अलेहदा नज़र पड़े। फ़क़त यह खयाली बात है जो मसलेहतन् रखी गई है। वरना कुछ नहीं है। यह बात उन की आख़री वक़्त दूर होगी जब दुनिया से कूच करना चाहेंगे। और यह बात मैं ने उन्हीं पर छोड़ रखी है। उस वक़्त तक जब तक क़ुदरत कोई नई शक्ल अख़्तियार न करे। यही मैं ने वायदा किया है कि जिस वक़्त इस दुनिया को वाक़ई छोड़ना चाहोगे, फ़ौरन् बुला लूँगा।

18-XI-45

(In train when returning)

S.V.: Before the world was born everything was smooth, no rise and no fall. The idea that gave birth to the marriage was due to the idea of the existence. The idea prevailed in every atom and molecule to invite together. The wave ran throughout the particles that were brought into shape or form. Positive and negative were the waves attracting each other to bring the Nature's work into perfection. I mean the idea of existence. What thing ruled over them was the idea of crude happiness in the

form of enjoyment. Why this crude sort of happiness was searched behind the senses because the entertainment created by the **Brahm** (ब्रह्म) to bring **Srishti** (सृष्टि) in a regular form. It was the pressure of the Will of the Almighty creating the whole, rooted deeply into the subtle body. The idea is totally complete. Any of you are so prepared to get it modified, in a way that it may reach the extent the Nature evolved. Then you are going side by side with the Nature in this respect. As time went on, the people became used to that sort of enjoyment done by them from generation to generation and their forefathers. The result is quite vivid before your eyes. These things should not be entered into one's own disciples. You have got the special power for such work as well. Whenever you find any such man coming before you, nip him at the point, I mean the sense enjoyment. This is all the dictation useful for the persons who have been trampled down sufficiently and their course directed to the wrong point. You will find every man prey to it. Reaching Shahjahanpur it will be your duty to devise means and methods for the disciples to follow and to get rid of the epidemic (वबा). People are not realising you. Your training starts from the Centre of Almighty in the very beginning. Do you know why it is so? The reply is given by my Lord somewhere in the notes. **You have come to change and this will be your function throughout**. Highest attempt will make your work smooth so that the people coming after you may be able to establish themselves on the highest pitch and may impart training in the life you sowed the seed.

19-XI-45 (Jeypore station)

S.V.: We have measured the field of the Mission's work to start here first and then to proceed further. The highly educated persons among you with enlightened heart will be successful here. We are pushing the way. The seed had been sowed by you in such a short interval. The man coming here will lead his way to Southern India. For the Northern India somebody else may be appointed. I had already appointed the man for Sourthern India who will start his Mission's work here first. I assure you that you will be soon gaining ground. As soon as you reach home, try your best to make such a man, said above, fit to work with your Master's energy. You should be quite strict internally so that each part may be developed in full way. Special sort of training is required for a man taking up this work so that your Mission may be esteemed highly by everybody. The other point about it, I give you at times.

End of Part V

Glossary

शब्द	अर्थ
आलमे-बाला	परलोक
अश-अश करना	admire greatly, निहायत ख़ुशी के मौक़े पर बोला जाता है।
आग़ाज़	आरम्भ
आलमे क़ुद्स	स्वर्ग लोग, Region of Piety
असर ज़ायल करना	असर दूर करना
अग़लब	संभाव्य, निश्चित
अस्नाए मराक़िबा	ध्यान के मध्य
अज़ ख़ुद	स्वयं
अज़ल	अनादिकाल
अबद	अनंतकाल, वो समय जिस का अंत न हो।
आमिल	कार्यकर्त्ता, कर्मचारी, अभिचारी, तांत्रिक
अम्ल(अमल)	अभ्यास
अलेहस्सुबह	बहुत सवेरे
इल्क़ा करना	Inspiration, revelation, वो बात जो ख़ुदा दिल में डाल दे।
इल्मे हुज़ूरी	ब्रह्म विद्या
इश्तियाक़	उत्सुकता, लालसा, अभिलाषा, आशंका
इबादत करना	पूजा करना
इन्दराज	entry, दर्ज करना, लेखन, अंकन
इब्तदाई	आरम्भिक
एत्दाल	moderate समता, सन्तुलन
एत्दाल पसंदी	मयाना रवी यानी समता आदि पसंद करने वाला
उर्फ़ियत	मशहूरी, formality, बड़ाई

उज़ू-उज़ू में	अंग-अंग में
उसूल ज़ाहिरी	अभिव्यक्त सिद्धांत
क़रार होना	चैन आना
कसाफ़त	Grossness, impurity,मलिनता,अपवित्रता
कैफ़ियत	आध्यात्मिक अवस्था
क़ल्ब	हृदय, दिल
क़ूव्वा बातिनी	शारीरिक शक्तियाँ
क़तअन् सलब करना	नितांत वंचित करना
कशमकश	खींचतान, असमंजस, संघर्ष
क़ाबिले तहँसीन	प्रशंसनीय, सराहनीय
कुलियतन्	सम्पूर्ण, completely
कोशाँ	प्रयत्नशील
कुबरा	ब्रह्माण्ड मण्डल
क़वानीन	(बहुवचन क़ानून का) नियम, विधान
क़याम	ठहरना, रहना
क़वायद	नियमावली
कायनात	सृष्टि, विश्व, जगत
क़द्र	respect, सम्मान
क़ासिर	विवश, मजबूर
कम सुख़नी	taciturnity, स्वल्प भाषी
कसरत पसंदी	अनेकता चाहना
ख़ानादारी	गृहस्थ (गृहस्थी)
ख़ुदादाद	God given, ईश्वर दत्त
ख़ुश इख़्लाक़ी	विनीत, सुशीलता, विनम्रता
ख़द्शा	डर
ख़िला या ख़ला	space, शून्य, रिक्त स्थान
ख़फ़्क़ान	दिल धड़कने का रोग, palpitation, hysteria, melancholy

ख़ुलूस	निष्कपटता, सरलता, सादगी, निःस्वार्थता
गर्वीदा करना या (गिरवीदा)	आसक्त करना, आकर्षित करना
ग़ल्ताँ व पेचाँ	उधेड़बुन में रहना
गुमशुदा हवास	संज्ञाहीन
गिराँमाया हिस्सा	बहुमूल्य हिस्सा
ग़ैर महदूदियत	असीमितता
ग़ोताज़न	डुबकी (पानी में) लगाने वाला
ज़हूर	प्रकटिकरण, प्रकटन
ज़हूर पज़ीर	प्रकट होना
ज़हूरे आलम	दुनिया (सृष्टि) की उत्पत्ति (प्रकटन)
ज़र्फ़	पात्र, बर्तन
जागुज़ी	पसंदीदा जगह
ज़ेरे नाफ़	नाभी के (से) नीचे
ज़ेरे नज़र	under observation, दृष्टि में
ज़ी रूह	जानदार, जीव, प्राणी
जिला	रोशनी, ज़िन्दगी
जुज़्वी तौर पर	आंशिक तौर पर
ज़र्रा (ज़र्रात)	कण
जुम्ला	तमाम, समस्त
जूलानी तबाअ	फुरतीला स्वभाव
जज़्ब	लय, लय अवस्था, आकर्षण, आत्मसात
जज़्बा	attraction, आवेश, मनोवृत्ति, मनोभाव
ज़ूद असर	effective, शीघ्र या तुरंत प्रभावी
ज़ोफ़े मेदा	पेट की दुर्बलता
ज़ौजीत	दामपत्य, पति-पत्नी सम्बन्ध
जौहर	सार, दक्षता, गुण, रत्न, मणि

तावक़्तेकि	समय आने तक
ताहयात	जीवन भर
तन्बीह	चेतावनी, warning
तकमील	पूरा करना
तालीम कुनन्दा	शिक्षक, trainer
ता वज़्ए हमल	बच्चा पैदा होने तक
तौफ़ीक़	उत्साह, साहस, शक्ति, सामर्थ्य
तहरीर	लेख, लिखाई
तहत	अन्तर्गत, नीचे, निम्न, अधिकार, क़ाबू
दिलशिकनी	heart-break, हृदय विदीर्ण होना
दिरेग़ करना	शोक करना, संकोच करना
दक़ीक़	कठिन, मुश्किल
दस्त बरदार होना	अलग होना
दस्तियाब होना	प्राप्त होना
नतीजा मतलूब	उद्दिष्ट परिणाम
नजात	छुटकारा, मुक्ति, मोक्ष
नश्वोनुमा	उन्नति, विकास
नबी	Prophet, अवतार
नफ़ीस फ़ैज़	सूक्ष्म, उत्म, मृदुल फ़ैज़
नाफ़ेअ	लाभकारी
नेमत	अनुकम्पा, बख़्शिश
नीचे लतायफ़	lower plexuses
नेमते ख़ुदावंदी	प्रभु कृपा
नक़ाहत	कमज़ोरी
नाफ़	नाभी, navel
नजासत	अपवित्रता
नागवार	अप्रिय

पाए के बुज़ुर्ग	दरजे के पूर्वज, प्रतिष्ठित
पीर	गुरु
पस-पुश्त	पीठ पीछे
पुख़्ता	पक्का, permanent
परस्तिशगाह	पूजा करने की जगह (मन्दिर आदि)
परस्तिगशगाहे आम्मा	वो जगह जहाँ हर व्यक्ति पूजा कर सके
पैवस्त होना	समा जाना
फ़ना होना	लय होना, मिट जाना
फ़रदन्-फ़रदन्	अलग अलग, एकाकी
फनाईयत	लय अवस्था (mergence)
फ़ौक़ियत	प्रधानता, उत्तमता
फ़ासिद ख़यालात	गन्दे विचार
फ़र्दोबशर	एक एक व्यक्ति
बजिन्सा	वर्ग, श्रेणी या लिंग अनुसार
बेग़िल व ग़िश	pure, unadulterated, plain मलिनता रहित, मनस्ताप रहित, बिना रंजिश
बदीही	self-evident, axiomatic, unpremeditated, प्रत्यक्ष
बराहे रास्त	सीधे रास्ते से
बिला कमोकास्त	बिना किसी कमी के, पूरा-पूरा
बिल्फ़ाज़ दीगर	दूसरे शब्दों में
बुजुज़	सिवाए, except
बारवर करना	fruitful, successful, फल लानेवाला, नतीजाख़ेज़
बारयाब होना	इजाज़त पाना, मुलाक़ात करना, बारगाह में हाज़री
बार होना	बोझ होना

बमूजिब	के अनुसार, की तरफ़
बाआवाज़े दुहल	नक़्क़ारे (दुंदुभि) की चोट पर
बशाशत	ख़ुशी, आनन्द
मसलेहत	हित, अच्छाई, परामर्श
मजलिसे आम्मा निर्धारिणी	बिषय निर्वाचिनी समिति, विषय समिति
मजमूई तौर पर	तमाम, यकजा तौर पर
मयाना रवी	following the middlepath, एत्दाल, समता
मुस्तस्ना	अलग किया हुआ
मुनव्वर करना	प्रकाशित करना, रोशन करना
मरहबा	धन्य, शाबाश
मुन्तक़िल करना	हस्तान्तरित करना (transfer)
मक़ामाते इस्फ़ल	अधम स्थान, सब से नीचे के स्थान
मुज़िर	हानिकारक
मुश्ताक़	इच्छुक, शौक़ रखनेवाला
मुराद मांगना	इच्छा पूर्ति के लिये प्रार्थना करना
मैलाने तबाअ	(मन की) अभिरुचि
मब्ज़ूल होना	मुत्वज्जह होना, ख़र्चहोना, to bestow, to attend to
मुवाफ़िक़	अनुकूल
मूजिद	आविष्कारक
मुस्तक़िल	permanent, दृढ़, स्थायी
मौज़ूँ	appropriate, उचित, संतुलित
मुरीद	शागिर्द, चेला
मुरीदैन	चेले
माजून मुरक्कब	वो मुरक्कब दवा जो शहद मिला कर गूंधी जाये, पाक

माद्दा	matter, मूल द्रव्य, तत्व गुण, अस्ल जौहर
मामूल	जिस पर अमल किया जाये
मुज़्महली	सुस्ती, gloominess
मौज के ताबे रहना	परमात्मा की मर्ज़ी पर आश्रित रहना
मेदा	पेट
मुहीत कुल	all embracing, all encompassing. व्याप्त, चारों तरफ़ फैला हुवा
यकसू	एकाग्र चित्त
यकसानियत	समरसता
रुजूअ होना	to incline, तवज्जह देना
रक़ीक़	subtle, fine, कोमल, तरल, पतला
रियाही मर्ज़	वायू का विकार, flatulence, gas
रौनक़ अफ़रोज़	शोभायमान
रवा रखना	उचित, न्याय संगत समझना
रग़बत	अभिरुचि, उत्सुकता, शौक़
रुझान	झुकाव, प्रवृत्ति, रुचि
रोज़े अज़ल	अनादिकाल, सृष्टिकाल का दिन
लामहदूद	अपार, असीमित
लाहक़	पीछा करना, चिपटना
लतीफ़	सूक्ष्म, पवित्र
लुआबदार	लेसदार
वक़्तन् फ़वक़्तन्	यदा कदा, कभी - कभी
वही (या वह्यी)	आकाशवाणी, ईश्वरीय आदेश जो पैग़म्बरों पर उतरे । वो कलाम जिस से इन्कार न किया जा सके

वाज़े करना	स्पष्ट करना, विस्तृत करना
वुसअत	विस्तार, फैलाव
वबा	संक्रामक रोग, बीमारी
वतीरा	व्यवहार, प्रणाली, पद्धति
वहदत	अद्वैत, ख़ुदा का एक होना
विलायते उलिया	पार ब्रह्माण्ड मण्डल (Para cosmic region)
हमातन मसरूफ़	पूर्णतया लीन, completely engrossed in
हमजिन्स	सजातीय
हम आहंगी	सहमती, एक साथ धड़कना, सुर या राग में साथ, harmony
हिद्दत	गर्मी
हर्फ़गीरी करना	दोश निकालना, नुक्ता चीनी करना
हमल	pregnancy, गर्भ
सरायत	प्रवेश, प्रभाव
सज्जादा नशीन	spiritual representative उत्तराधिकारी
सूफ़ियाए किराम	ब्रह्मवादी, अध्यात्म वादी, noble or great mystics
सुलूक	आचार, व्यवहार, ईश्वर प्राप्ति
सुरूर (या सरूर)	मस्ती, हलका नशा, हर्ष
शौहर	Husband, पति
शरायत	नियम, conditions
शग़ल	ध्यान

......